(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 51, अंक 1, जुलाई, 2015
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

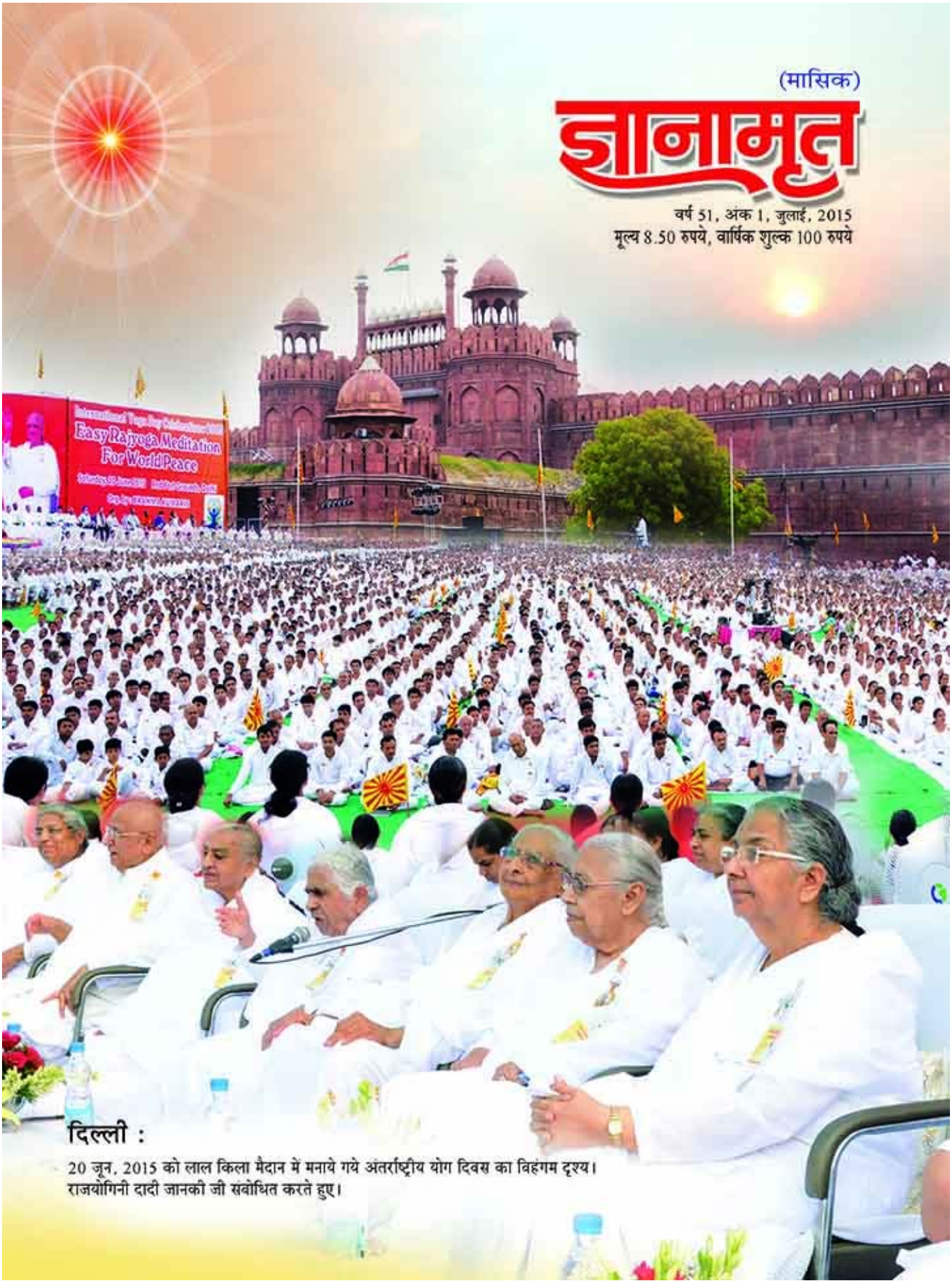

दिल्ली :

20 जून, 2015 को लाल किला मैदान में मनाये गये अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का विहंगम दृश्य।
राजयोगिनी दादी जानकी जी संबोधित करते हुए।

1.रांची- झारखण्ड की राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुर्मु का अभिनन्दन करते हुए ब्र.कु.निर्मला बहन। **2.ज्ञानसरोवर-** ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, नेशनल रिसर्च सेन्टर फॉर सोड ॲण्ड स्पाइसेस, अजमेर के निदेशक डॉ.बलराज सिंह, संसद सदस्य बुलंदशहर डॉ.भोला सिंह, ब्र.कु.पद्मा बहन, ब्र.कु.राजू भाई, ब्र.कु.सरला बहन तथा अन्य। **3.येम्मीगनुर-** आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता चंद्रबाबू नायडू को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.विजयलक्ष्मी बहन। **4.दिल्ली (ओ.आर.सी.)-** 'तनाव मुक्त जीवन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, विधायक भ्राता सोमनाथ भारती, पूर्व सामाजिक न्याय मंत्री कुमारी शैलजा, पूर्व सांसद भ्राता हरीश सिंह नलवा, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य। **5.चण्डीगढ़-** 'स्वस्थ तथा प्रसन्न समाज के लिए सहज राजयोग' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पंजाब तथा हरियाणा उच्च न्यायालय की न्यायाधीश बहन दया चौधरी, न्यायाधीश के.कानन, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.अमीरचन्द भाई, ब्र.कु.उत्तरा बहन तथा अन्य। **6.दिल्ली (पाण्डव भवन)-** जनजातीय मामलों के केन्द्रीय मंत्री भ्राता जुअल ओराम को प्यूरिटी पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु.फातिमा बहन। साथ में ब्र.कु.शुभकरण भाई। **7.भिवानी (सेक्टर-13)-** गाँव बापोड़ा में केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री जनरल (रिटायर्ड) वी.के.सिंह की ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.आभा बहन। **8.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** वैज्ञानिक तथा अभियन्ता प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.सरला बहन, केन्द्रीय फिल्म सेंसर बोर्ड के अध्यक्ष भ्राता पहलाज निहलानी, ब्र.कु.मोहन सिंघल तथा अन्य।

शुभाशीष

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा शिव तथा आदिदेव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा दिए गए अमूल्य ज्ञान-मोतियों द्वारा जन-जन का अलौकिक शृंगार करने वाली ज्ञानामृत पत्रिका ज्ञान-सेवा के 50 वर्ष पूरे कर चुकी है।

प्रतिदिन कार्यव्यवहार में आते-आते मानवात्मा के मूल गुण जब धूमिल होने लगते हैं तो ज्ञानदायिनी, गुणदायिनी, शक्तिदायिनी 'ज्ञानामृत' उस धूल को हटाकर आत्मा को नई चमक प्रदान करती है। जीवन-पथ को सुगम, सरस और सफल बनाने के लिए ज्ञान-योग के नवीन रहस्य स्पष्ट करती है। समाज में नैतिकता और आध्यात्मिकता का अलख जगाते हुए, निर्बाध आगे बढ़ते रहने के लिए उमंग-उत्साह के पंख प्रदान करती है।

ज्ञान रूपी औषधि से सबको निरोग बनाने वाली इस पत्रिका को सभी राजयोगी भाई-बहनें गाँव, शहर, गली, मोहल्ले तक पहुँचाने की सेवा अथक होकर करते रहते हैं और आगे भी करते रहेंगे, यही मेरी शुभकामना है। जो भाई-बहनें नवीन मनन-चिन्तन कर ज्ञान के लेख भेजते हैं, जो इसके रूप को निखारते हैं, जो इसे जन-जन तक पहुँचाते हैं और जो इसे पढ़कर अपने पुरुषार्थ को उड़ती कला की ओर ले जाते हैं उन सबको मैं बधाई देती हूँ।

वर्ष 2015-2016 के लिए स्नेही पाठकों के लिए मेरा यही शुभ सन्देश है कि बीती बात का कभी चिन्तन न चले, हर संकल्प शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ और दृढ़ हो, हर आत्मा के प्रति कल्याण भाव रहे, फ़ाख़दिल बन हर परिस्थिति में अचल-अडोल, एकरस रह सेवा करते रहें। बापदादा और हम सबकी यह प्यारी पत्रिका दिनोंदिन उन्नति को पाती हुई ज्ञान के इत्र से विश्व को खुशबूदार बनाती रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

बी.के.जानकी

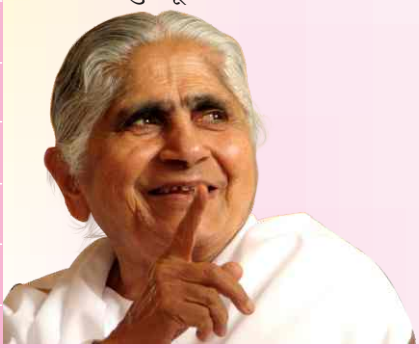

अमृत-सूची

- भूतकाल को भूलें *(सम्पादकीय)* 4
- स्वास्थ्य में हुआ सुधार.....6
- योग में डूबी रहती थी.....7
- ईश्वरीय कारोबार में.....9
- बाबा कहते *(कविता)* 11
- 'अचानक' का पाठ याद 12
- विचारों को मिली नई दिशा ...13
- अंग-संग रखता हूँ बाबा को ..13
- सामना करने की शक्ति 14
- जेल में सच्ची शान्ति.....16
- दुखों का अंत हो गया 17
- छूटा 51 साल पुराना दुर्व्यसन .18
- बहुत तड़पी थी प्रभु के लिए ..19
- भगवान के आदेश का 20
- चलो अपने वतन *(कविता)* ...21
- मधुबन का तट हो 22
- हर पल सहायक बाबा.....23
- श्रेष्ठ भाग्य का आधार 24
- मन की सैर 26
- अच्छी सोच है अच्छे.....27
- जाग पड़ो... *(कविता)* 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- धैर्य से समाधान.....32
- गा रहा है रोम-रोम.....33
- पहले चैकिंग फिर पैकिंग.....34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

भूतकाल को भूलें

एक बार एक कवि कहीं जा रहा था, उसके हाथ में स्वरचित कविताओं की डायरी थी। अचानक बरसात आ गई, छाता था नहीं, उसने भीगने से बचाने के लिए डायरी पास के दुकानदार को दे दी और कहा, कल आकर ले लूँगा। अगले दिन आया तो देखा, दुकानदार उसके पन्ने फाड़कर, पुड़िया बनाकर ग्राहकों को दे रहा है। कवि हैरान! बोला, यह क्या कर रहे हो? दुकानदार ने कहा, मैं भुलक्कड़ हूँ, भूल गया कि यह आपकी डायरी है पर चिन्ता न करें, लिखे गए बेकार पन्ने ही फाड़े हैं, कोरे पन्ने सारे सुरक्षित हैं।

कवि पर क्या बीती होगी? उसके लिए तो लिखे हुए पन्ने ही उसकी दौलत थी। आइये, हम अपने मन के पन्नों को चेक करें, हमें कौन-से प्रिय हैं? जो लिखे जा चुके हैं वो या अभी जो लिखने बाकी हैं? हम कौन-से फाड़ना चाहते हैं और कौन-से रखना चाहते हैं? निश्चित ही मानव जीवन तभी आगे बढ़ सकता है जब वह लिखे हुओं को फाड़ डाले और खाली पन्नों पर प्रभु-प्रेम की नई इबारत लिखे।

मुर्दा घटना के हस्तक्षेप से बचें

पास्ट की कटु स्मृतियाँ हमारी वर्तमान की खुशियों के लिए बाधक बन जाती हैं। यदि हम उन्हें ना भूलें, निरन्तर मन में सम्भाले रखें तो हम अपने में कोई बदलाव नहीं ला सकते क्योंकि हमारा मन नया सोचने की बजाय एक घिसी-पिटी, व्यर्थ सोच से बंध जाता है। पुरानी कटु बात को बार-बार सोचने का अर्थ है कि हमने भूतकाल की मुर्दा घटना को इस बात का रास्ता दे दिया कि वह हमारे आज और कल दोनों को खराब करे। हम सावधान हो जाएँ, एक मुर्दे को अपने जीवन में हस्तक्षेप न करने दें।

एक पीढ़ी की गलती को अगली पीढ़ी तक न ढोएँ

मान लीजिए, कोई ऐसा बालक हमारे आश्रित है जिसके माता-पिता ने कभी हमें कड़वे बोल बोले थे। भले ही परिस्थिति प्रमाण उस बच्चे को हमारी और हमें उसकी ज़रूरत है पर यदि हमने संकल्पों में से उसके पिता के बोले कड़वे बोल रूपी कंकर की स्मृति और उसकी दोहराई को समाप्त नहीं किया तो उस बच्चे को कभी भी दिल से स्वीकार नहीं करेंगे। न चाहते भी उसे नफरत की दृष्टि से देखेंगे। साथ भी रहेंगे पर स्वभाव भी नहीं मिलेगा, नफरत की दरार बनी रहेगी। साथ को ढोयेंगे ज़रूर पर साथ का सुख नहीं ले पाएंगे। ऐसा किसी भी सम्बन्ध के साथ हो सकता है। अत: सूक्ष्म चेकिंग करके अपने नज़रिए को बदलें। यदि कोई व्यक्ति राजमा में पड़े कंकर निकाले तो बहुत सहज है, चने और मूंग की सफाई भी सहज है परन्तु यदि राई में मिले कंकर निकालने हों तो बड़ा मुश्किल काम है। कर्म और वाणी की चेकिंग मोटी चेकिंग है, इन पर कोई दूसरा भी ध्यान खिंचवा सकता है पर अपने संकल्पों की श्रेणी को चेक करना, यह बड़ा सूक्ष्म पुरुषार्थ है। संकल्पों में मिली इस कड़वी स्मृति रूपी कंकर को निकालने के लिए अपने मन को समझाएँ कि एक पीढ़ी की गलती को दूसरी पीढ़ी तक क्यों ढोएँ। जब उग्रसेन के घर कंस और हिरण्यकश्यप के घर प्रह्लाद पैदा हो सकता है तो पिता भले ही कड़वा था पर पुत्र मीठा हो सकता है। इस प्रकार की स्थितियों में बीती बातों को भुला कर और निर्दोष सम्बन्धों की शुरूआत करके ही हम सुखी रह सकते हैं।

मृत के लिए 80 प्रतिशत और जीवित के लिए 20 प्रतिशत

बीती को याद ना करना ऐसा ही है जैसे नदी पार करना पर गीले ना होना। जिन घटनाओं रूपी नदी में से हम गुज़रे उनकी यादों से हमारा मन गीला न हो, यह असम्भव नहीं तो मुश्किल अवश्य है। इसीलिए लोग कहते हैं, मेरे साथ बीती

है, कैसे भूल जाऊँ, आपके साथ बीते तो मालूम पड़े। मानव को सबसे ज्यादा मोह अपनी स्मृतियों से होता है। तभी तो उसका 80 प्रतिशत समय भूतकाल के वस्तु, व्यक्ति और घटनाओं की स्मृतियों में गुज़रता है। विचार कीजिए, वर्तमान के कामों के लिए केवल 20 प्रतिशत समय ही बचता है। क्या इतना समय पर्याप्त है? तभी तो हममें से अधिकतर समय कम और कार्य ज्यादा होने की शिकायत करते हैं। यदि भूतकाल के प्रति गंवाया जाने वाला समय बचा लिया जाए तो हमें वर्तमान के कार्यों के लिए अधिक समय मिलेगा और हम समय कम होने के तनाव से बचे रहेंगे। बीते हुए कार्य के लिए हम कहते हैं 'हो गया'। इसका अधिक स्पष्टीकरण है 'हुआ' और 'चला गया'। जो चला गया, गुज़र गया अर्थात् जो मर गया उसके लिए 80 प्रतिशत समय और जो सामने है अर्थात् ज़िन्दा है उसके लिए मात्र 20 प्रतिशत समय! कितने आश्चर्य की बात है। इसलिए विदा किए हुए समय को पुन: मत बुलाइये।

समस्या है दबी शक्ति को बाहर निकालने का साधन

जीवन में समस्या आने पर सोचने लग जाते हैं कि कुछ समय पहले वो समस्या आई, उससे कुछ दिन पहले एक और समस्या आई थी, जीवन को इन समस्याओं से पता नहीं कब निजात मिलेगी? जीवन एक स्कूल है, हर पल सीखने का स्थान है, समस्याएँ इस स्कूल के परीक्षा-पत्र हैं। समस्याएँ जाँच करने आती हैं कि हमने क्या सीखा है? मान लीजिए, एक विद्यार्थी परीक्षा हाल में परीक्षा-पत्र हाथ में पकड़े हुए सोच रहा है कि एक साल पहले मैंने 12वीं की परीक्षा दी थी और उससे एक साल पहले 11वीं की परीक्षा दी थी, इन परीक्षाओं से पता नहीं कब निजात मिलेगी, तो हाथ में पकड़े परीक्षा-पत्र का क्या हाल होगा, कितने प्रश्नों का हल वो कर पाएगा? निश्चित रूप से असफल हो जाएगा। इसी प्रकार समाधान सोचने की बजाय यदि हम बीते काल में आई समस्याओं को याद कर मन को परेशान कर रहे हैं तो निश्चित रूप से वर्तमान की समस्या का समाधान पाने की शक्ति खो देंगे या समस्या मन-बुद्धि पर हावी रहेगी। इसलिए भूतकाल को भूलकर सारी शक्ति वर्तमान की समस्या का समाधान खोजने में लगाएँ और समस्या को बुद्धि की दबी हुई, भूली हुई शक्तियों को बाहर निकालने का साधन समझें।

बैक और फ्रन्ट स्टेज

यह सृष्टि एक रंगमंच है जिस पर हम सभी मानवात्माएँ पार्टधारी हैं। किसी ने बहुत सुन्दर कहा है,

काम किए जा, राम भजे जा, ना काहू का डर है।
इस नगरी में सभी मुसाफिर ना काहू का घर है।।

रंगमंच के दो पहलू होते हैं, एक पर्दे के पीछे का, दूसरा पर्दे के आगे का। कलाकार मंच पर जाकर हंसता, रोता, गुस्सा करता, रूठता, बदला लेता है पर पर्दे के पीछे आते ही सामान्य हो जाता है। रंगमंच पर जाकर उसे जो थकान होती है, वह पर्दे के पीछे आते ही उतर जाती है। रंगकर्मी को हमेशा यह दिलासा होता है कि यदि मुझे अभिनय करते चोट लग गई या कोई अन्य तकलीफ हो गई तो मेरी दवा-सेवा का प्रबन्ध पर्दे के पीछे है इसलिए वह सदा निश्चिंत रहता है। प्रश्न यह है कि क्या हमारे लिए कोई पर्दे के पीछे की जगह नहीं है जहाँ हम भी जीवन की आपा-धापी से थककर विश्राम पा सकें। हमें भी तो दिलासा हो कि जीवन में कोई तकलीफ हुई तो हमारी भी दवा-सेवा करने वाला पर्दे के पीछे है।

मानव के लिए भी बैक स्टेज (पर्दे के पीछे) की जगह है, सेवाधारी भी हैं परन्तु वह भूल गया है। बैक स्टेज है हमारा प्यारा घर परमधाम जहाँ से हम इस सृष्टिमंच पर पार्ट बजाने आए हैं। वहाँ अखंड शान्ति है और पवित्रता है। परमात्मा पिता ने हमें ज्ञान द्वारा योग्यता दी है कि हम कर्म करते भी मन-बुद्धि से पर्दे के पीछे वाली शान्ति जैसी स्थिति में रह सकते हैं। सबके साथ पार्ट बजाते भी मन को बैक स्टेज पर रखें। बीच-बीच में परमधाम जाकर परमात्मा से मिलन

मनाएँ तो पार्ट बजाते जो थकान हुई होगी, उतर जाएगी, परमात्म-प्यार में हीलिंग हो जाएगी और फिर आकर दुगुने उमंग से पार्ट बजा सकेंगे। जैसे एक कलाकार फ्रंट स्टेज पर सभी प्रकार की स्थितियों का अभिनय करते भी अपने मन को बैक स्टेज जैसा सामान्य रखता है, हमें भी सब प्रकार के अभिनय करते भी मन को परमधाम जैसी शान्ति में रखना है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

स्वास्थ्य में हुआ सुधार

चण्डी प्रसाद उनियाल, दिलशाद कालोनी, दिल्ली

सायं 5 बजे का समय था। मैं अपने मित्र से मिलने दिलशाद कालोनी जा रहा था। रास्ते में मैंने एक बोर्ड देखा जिस पर लिखा था – ''प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, सुख, शांति, पवित्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' मैं बोर्ड पढ़ ही रहा था कि एक श्वेत वस्त्रधारी ने गेट खोलकर अंदर प्रवेश किया, फिर यह सिलसिला चलता रहा।

अंदर जाने का साहस

अंदर जाऊँ या न जाऊँ, इस दुविधा में मैं फंस गया। मन में एक आवाज़ आई, बच्चे, आ जाओ। मैंने गेट खोला और अंदर प्रवेश कर लिया। अपूर्व शांति, सुगंधित वातावरण, चारों ओर पवित्रता और लाल रंग का प्रकाश। मुझे लगा जैसे स्वर्ग में प्रवेश कर लिया। सामने ब्रह्मा बाबा की दिव्य मूर्ति, भृकुटि के मध्य चमकता ज्योतिर्बिन्दु। मंत्र-मुग्ध मैं अन्य भाइयों के साथ फर्श पर बैठ गया।

केबिन की ओर

अभी मैं ठीक से बैठ भी नहीं पाया था कि एक भाई आये, मेरे कंधे पर हाथ रखा और अपनी ओर आने का इशारा किया। मैं समझा, अब मेरी खैर नहीं, मैंने बिना आज्ञा के यहाँ प्रवेश किया है। वे भाई मुझे एक केबिन में ले गये और दरवाज़ा बंद कर लिया। अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि अच्छा खासा दण्ड मिलेगा। चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। बैठो, उन भाई ने मधुर वाणी में कहा और अपने चेहरे पर मुसकराहट बिखेर ली। मैंने पढ़ा था, मुसकान प्रेम की भाषा है, मैं आश्वस्त हुआ।

शांति का अनुभव

उन भाई की मुसकराहट में प्रेम था, मधुरता थी। उन्होंने पूछा, पहली बार आये हो? मेरा जवाब 'हाँ' था। आपको 7 दिन का कोर्स करना होगा, उसके बाद आप वहाँ बैठेंगे, उन्होंने बताया। फिर मेरे बारे में कुछ जानकारी हासिल की और बाद के 7 दिनों तक लगातार आत्मज्ञान, पवित्रता, सुख, शांति का ज्ञान दिया, परमपिता शिव बाबा का परिचय दिया। राजयोग में बैठने पर मुझे विशेष अनुभूति होने लगी। धीरे-धीरे मेरा स्वास्थ्य (2009 में मुझे लकवा मार गया था) ठीक होने लगा। बहुत सारे पारिवारिक कार्य स्वाभाविक ही पूरे हो गए। दिल से निकलता है, वाह बाबा वाह! मेरे प्यारे शिव बाबा, आप बहुत बड़े चमत्कारी जादूगर हैं। आपका कोटि-कोटि धन्यवाद।

पुण्यतिथि पर विशेष...

योग में डूबी रहती थी दीदी की आँखें

ब्रह्माकुमार बाबाराम, आबू पर्वत

दिव्यगुणों से शृंगारित, रमणीकता और गंभीरता की प्रतिमूर्ति आदरणीया दीदी मनमोहिनी जी की रूहानियत भरी जीवनशैली हर यज्ञवत्स में अलौकिक ऊर्जा का संचार कर देती थी। एक दशक मधुबन में दीदी के संग रहकर पालना लेने का अनुभव कभी भुलाए नहीं भूलता। दीदी जी ऐसी पक्की योगिन थी जो उनके सानिध्य में हमारी भी स्थिति तुरन्त योगयुक्त हो जाती थी। उनको देखने से ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि उनकी आँखें योग में ही डूबी हुई हों। उनकी दृष्टि पड़ने से एकदम डीप साइलेंस की अनुभूति होती थी। यज्ञ-सेवा के प्रति पूरी समर्पणता, सच्चाई-सफाई, ईमानदारी के साथ लव और लॉ का संतुलन रखते हुए दीदी जी हर यज्ञवत्स को आगे बढ़ाती थी।

फैसले करने की दिव्य विधि

दीदी जी की फैसला करने की विधि बहुत युक्तियुक्त, सुंदर व सबको संतुष्ट करने वाली होती थी। एक बार की बात है, मैं उनके पास बैठा था, तभी एक भाई किसी अन्य की शिकायत लेकर आया। उन्होंने बड़े प्यार से सुना और शिकायत को लिखकर लाने को कहा। दूसरे भाई से भी पूरी बात सुनी और लिखकर लाने को कहा। फिर दोनों को इकट्ठा बुलाया, दोनों की विशेषताओं का वर्णन कर उन्हें कर्मों में सच्चाई-सफाई के फायदे समझाकर आपस में प्यार से मिला दिया। इस प्रकार दोनों ही संतुष्ट होकर खुशी-खुशी फिर से यज्ञ-सेवा में जुट गए।

संस्कारों को मिलाने में बेजोड़

दीदी जी अपने समान साथियों से संस्कारों का तालमेल करने में भी बेजोड़ थी। यज्ञ-सेवा की वृद्धि के लिए दादी जी को उमंग का संकल्प आता तो वे दीदी जी को फौरन सुनाती कि बाबा ने मुझे यह संकल्प टच किया है। एक बार दादी जी को अमृतवेले संकल्प आया कि मधुबन के डिपार्टमेंट के निमित्त ब्रह्मावत्स बारी-बारी दीदी और दादी के संग ब्रह्माभोजन करें, पुरुषार्थ की लेन-देन करें और दिल की बात कहते हुए स्वउन्नति की भी बात करें। बड़ी दादी जी के इस संकल्प के प्रति दीदी जी ने कहा, बहुत ही अच्छा, इससे मधुबन का संगठन भी मजबूत होगा और आपस में भाइयों को समीप आकर पुरुषार्थ की बातें करने का मौका भी मिलेगा। दीदी, दादी की एकमत से रूहानी प्यार की पालना की अनुभूति ऐसी होती थी कि ब्रह्मावत्स अपनी कमज़ोरियों को मिटाने की युक्तियाँ बिना संकोच दीदी, दादी जी से पूछ लिया करते थे। इससे अपनेपन की गहन अनुभूति होती थी। यज्ञवत्स भी यज्ञ सेवा में अपनी हड्डियाँ स्वाहा करते हुए ईश्वरीय मर्यादाओं के अनुरूप खुशी-खुशी तीव्र पुरुषार्थ करने में जुट जाते थे।

मुरली से अति प्यार

दीदी जी का मुरली से बहुत-बहुत प्यार था। मुरली के प्रति रुचि पैदा करने के लिए वे प्रश्न निकालती थी और चिटचैट करते हुए प्रश्न पूछकर सबको हरा देती थी। फिर लास्ट में उत्तर देती थी। सभी हैरान होते कि दीदी मुरली में से कितने अच्छे प्रश्न-उत्तर निकाल लेती हैं! प्रश्नोत्तरी के

ज़रिए सबमें उमंग-उत्साह भर देती थी।

सवेरे की मुरली दादी जी पाण्डव भवन के हिस्ट्री हॉल में सुनाती थी, दीदी जी सामने बैठकर सुनती थी परन्तु सुनते-सुनते भी बीच-बीच में विशेष ध्यान दिया करती थी कि कोई नींद तो नहीं कर रहा है? कोई झुटका तो नहीं खा रहा है? सबको एक्टिव व अलर्ट रखने के लिए दीदी जी बीच-बीच में युक्ति से मुरली के प्वाइंट पूछती थी कि बताओ, बाबा ने क्या कहा? नींद करने वाला अलर्ट हो जाता था, उसकी नींद गायब हो जाती थी और प्यार से मुरली सुनने लगता था।

पालना में भी ध्यान

दीदी जी यज्ञवत्सों की पालना में भी विशेष ध्यान देती थीं। दिसम्बर-जनवरी महीने में बहुत ठंड होती थी, कई भाई-बहनें अपने घर से गर्म कपड़े नहीं लाते थे तो दीदी जी का उन पर विशेष ध्यान जाता था। एक बार मधुबन के आंगन में मेरे साथ एक भाई बैठा था जिसने आधी बाजू का स्वेटर पहना था। दीदी जी की नज़र उस पर पड़ी, पूछा, भाई, ठंड बहुत है, आपके पास पूरी बाजू वाला स्वेटर नहीं है क्या? भाई ने जवाब दिया, जी नहीं। दीदी ने तुरंत लच्छू दादी को बुलाकर उस भाई को पूरी बाजू वाला स्वेटर दिलवाया।

संग से संभाल

एक दिन दीदी ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा कि कभी भी परचिंतन करने वालों का संग नहीं करना, ज्ञान रत्नों का लेन-देन करने वालों का ही संग करना। संगठन में रहने के लिए कभी किसी का अवगुण चित्त पर नहीं रखना। हर आत्मा के प्रति शुभभावना, शुभकामना रखते हुए सभी को प्यार की दृष्टि से देखना, नफरत से नहीं। दीदी जी की ऐसी शिक्षाएँ हमारे में उमंग भर देती थीं। इन शिक्षाओं को सामने रख आज भी मैं ध्यान देता हूँ कि किसी कारणवश सेवा यदि ऊपर-नीचे हो गई तो भी

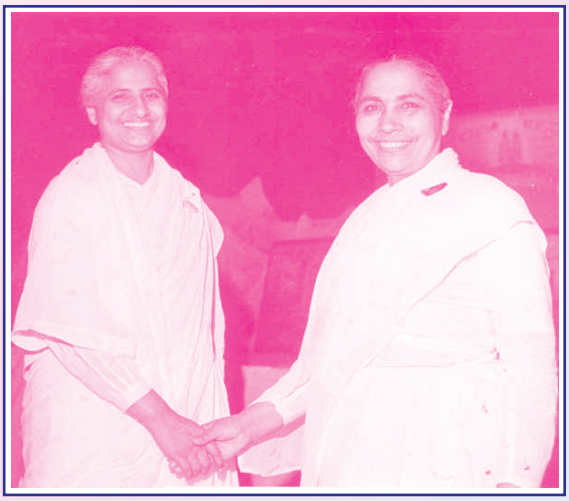

अपनी स्थिति ठीक रहे।

परखने की शक्ति बेमिसाल

दीदी जी की परखने की शक्ति बेमिसाल थी। उनके सामने कोई भी आता था तो उसकी मानसिकता को परखकर तुरंत निर्णय कर लेती थी। फिर दादी जी से चर्चा कर आगे कदम उठाती थी। दीदी-दादी भले शरीर से अलग-अलग थे लेकिन दोनों की आत्मिक राय एक जैसी होने के कारण आपसी प्यार की खूशबू से मधुबन का आंगन तो क्या पूरा विश्व महकता रहा। आज भी दीदी की शिक्षाएँ कानों में गूंजकर पुरुषार्थ को तीव्र करने की प्रेरणा देती हैं। ❖

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 20

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा हम बच्चों को वर्तमान दुनिया में यज्ञ कारोबार कैसे चले, उसकी शिक्षा देते हैं, साथ-साथ आने वाली नई दुनिया के लिए भी शिक्षा देते हैं ताकि 2500 वर्ष तक दो युगों में हम पूरे विश्व का कारोबार अटल, अखंड, निर्विघ्न रूप से चला सकें। ये हमारी बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। इसे निभाने के लिए हमें यज्ञ कारोबार या राज्य कारोबार करने का पुरुषार्थ करना पड़ता है इसलिए मैं Master of Divine Administration (MDA) के बारे में लेख लिख रहा हूँ।

भारत में सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक कारोबार करने के लिए बहुत-सी संस्थायें हैं। भारत सरकार के इस वर्ष के बजट में बताया गया है कि भारत में इंकम टैक्स रिटर्न भरने वाली संस्थायें 2013-14 में 1,06,443 थीं। सन् 2014-15 में 30 नवंबर तक 99,076 संस्थाओं ने इंकम टैक्स का रिटर्न भरा है। इन संस्थाओं ने धार्मिक और धर्मादा (Religious and Charitable) कार्यों के ऊपर 2013-14 में 2,25,472 करोड़ रुपये का खर्च किया। उससे पहले के वर्ष में इन्हीं संस्थाओं ने 2,00,274 करोड़ रुपये खर्च किये। ट्रस्ट, सोसायटी, फाउंडेशन आदि संस्थाओं के लिए दानदाताओं को डोनेशन पर 80 G की जो छूट मिलती है, यह कुल छूट 2013-14 में 1,112.60 करोड़ रुपये और उससे पहले के वर्ष में 862.60 करोड़ थी।

सन् 2013-14 में धार्मिक और धर्मादा कार्यों पर जो 2,25,472 करोड़ रुपये का खर्च हुआ था, वो भारत सरकार की राष्ट्रीय आमदनी (GDP) का 2% था अर्थात् भारत सरकार को इंकम टैक्स के द्वारा जो भी आमदनी होती थी, उतना ही खर्च ये संस्थायें करती थीं अर्थात् संस्थाओं का कारोबार इतना विशाल था और उसके अलावा भारत सरकार ने भी सामाजिक सेवाओं और व्यवस्थाओं के ऊपर उस वर्ष में 25,572 करोड़ का खर्च किया था अर्थात् सरकार द्वारा जो खर्च हुआ था, उससे कई गुणा ज्यादा खर्च संस्थाओं ने धार्मिक और धर्मादा कार्यों के लिए किया था। इन सब बातों से मालूम पड़ता है कि धार्मिक और धर्मादा कार्यों के लिए लोग कितना खर्च करते हैं फिर भी सरकार को हर बार धर्मादा संस्थाओं की कानूनी व्यवस्था में परिवर्तन करना पड़ता है क्योंकि कई व्यक्ति धर्मादा खर्च के नाम पर अपना खर्च उसमें डाल देते हैं, इसके कारण धर्मादा संस्थाओं का नाम बिगड़ता है और इसी कारण वर्तमान समय में धर्मादा संस्थाओं का कारोबार करने के लिए ईमानदार, निष्ठावान और मूल्यनिष्ठ व्यक्तियों की ज़रूरत है।

मेरे एक मित्र ने अपनी पत्नी के नाम पर छोटा-सा हॉस्पिटल खोला परंतु वह हॉस्पिटल उसने अपने शहर में नहीं बल्कि अपने शहर से 60 कि.मी. दूर दूसरे शहर में खोला। मैंने उससे पूछा कि आपने अपने शहर में हॉस्पिटल क्यों नहीं खोला तो उसने बताया कि मुझे मूल्यनिष्ठ, सच्चे और समर्पित भाव से सेवा करने वाले व्यक्तियों की ज़रूरत थी और अगर वे नहीं मिलते तो मेरा ही नाम बदनाम होता इसलिए मैंने चुन-चुनकर ऐसे व्यक्तियों को हॉस्पिटल में रखा है। कहने का भाव है कि सत्यता तथा मूल्यनिष्ठा के आधार पर काम करने वाले व्यक्तियों की हर जगह आवश्यकता होती है।

मैं भारत के सबसे धनाढ्य मंदिर तिरूपति बालाजी मंदिर के मुख्य कार्याधिकारी से एक बार मिला था। उन्होंने

मुझे कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में जैसे सेवाभावी समर्पित भाई-बहनें हैं जो पवित्रता के आधार पर कारोबार करते हैं, ऐसे हमारे पास नहीं हैं। उस समय उनके पास 18,000 भाई-बहनें थे परंतु किसी में सेवा भाव नहीं था, सब नौकरी करते थे। उनके 3 प्रकार के लक्ष्य होते थे –

1. हर महीने पगार कितनी मिलेगी?

2. वर्ष के आखिर में पगार में बढ़ोतरी कितनी होगी?

3. वर्ष के आखिर में बोनस कितना मिलेगा?

इसलिए उन्होंने कहा कि आपकी संस्था के भाई-बहनें समर्पण भाव के आधार पर जो कारोबार कर रहे हैं, वह अद्‌भुत है। मैंने कहा कि आपके यहाँ सेठ और नौकर का संबंध है इसलिए पगार, बढ़ोतरी, बोनस की बात आती है परंतु ब्रह्माकुमारीज़ संस्था में हम कोई नौकर नहीं हैं परंतु परमात्मा पिता के बच्चे हैं अर्थात् वहाँ पर सेठ और नौकर का संबंध है और यहाँ ब्रह्माकुमारीज़ में पिता और पुत्र का संबंध है। यह संबंध ज़रूरी भी है, इस संबंध से शिवबाबा हम बच्चों को सिखाते हैं और चलाते हैं। दुनिया में भी बाप की गद्दी पर बेटा बैठता है जैसे मुगल साम्राज्य में बाबर की गद्दी पर हुमायूं, फिर हुमायूं के बाद अकबर, जहांगीर, फिर शाहजहां और औरंगजेब बैठे, वैसे ही यहाँ भी शिवबाबा 2500 वर्ष तक विश्व पर राज्य करने के लिए हमें भेजते हैं। हम बच्चे हैं इसलिए हमारे हाथ में ही नये विश्व के संचालन का कारोबार देते हैं। इसलिए मैं हमेशा ही कहता हूँ कि यह विश्व विद्यालय होवनहार विश्व महाराजा, विश्व महारानी बनने वालों को ट्रेनिंग देने का ट्रेनिंग सेन्टर है। यहाँ परमात्मा खुद ही बाप बनकर हम बच्चों को शिक्षा दे रहे हैं और बाप बनकर जो शिक्षायें मुझे बाबा ने सिखाई हैं, उसके बारे में मैंने अभी तक 13-14 लेख लिखे हैं।

आज भी एक बात लिखना चाहता हूँ। जब ट्रस्ट बना तब बाबा ने मुझे शिक्षा देने के लिए पत्र लिखा कि बच्चे, यह ट्रस्ट सेवा के लिए है, यज्ञ कारोबार में मदद करने के लिए है। इसका कारोबार त्वरित गति से होना चाहिए इसलिए निर्णय लेने में देरी नहीं करनी चाहिए क्योंकि देरी करने से कई बार कार्य बिगड़ता है।

प्यारे बाबा का यह पत्र पढ़ते ही मुझे ब्रह्मा बाबा के साथ का अपना अनुभव याद आया। एक बार मैं आबू में बाबा के साथ रात्रि क्लास में बैठा था। बाबा रात्रि क्लास करा रहे थे। इतने में ईशू दादी को बाबा ने कहा कि जगदीश बच्चे का जो लेख आया है, वो लेकर आओ। ब्रह्मा बाबा ने क्लास के बीच मुझसे कहा – यह लेख पढ़ना और अपने विचार बाबा को बताना।

अगले दिन सुबह मुरली क्लास के बीच में ही ब्रह्मा बाबा ने मुझसे पूछा, बच्चे, वह लेख पढ़ा? हम सब जानते हैं कि हम बहाने बनाने में नंबर वन हैं। मैंने कहा, बाबा, रात को आपने आर्टिकल दिया था, रात को जाकर मैं सो गया था और सुबह तैयार होकर मुरली क्लास में आ गया, टाइम ही नहीं मिला। ब्रह्मा बाबा ने सारी क्लास के बीच में कहा, बच्चे, बाप के साथ ठगी नहीं करो। तुम्हारे पास पूरा ही समय था। पूरी रात पड़ी थी। बाप का कार्य रात को जाग कर भी करना चाहिए। यह पांडव गवर्मेन्ट का कार्य है। पांडव गवर्मेन्ट को सतर्क रहकर कारोबार करना चाहिए। मैंने कहा, बाबा, मैं अभी पढ़कर आपको मुरली क्लास के बाद जवाब देता हूँ। बाबा ने कहा, नहीं बच्चे, अभी समय गया, मैं खुद ही पढ़कर जवाब दे दूँगा। बाबा ने तुम्हें लेख पढ़कर जवाब देने का चांस दिया था परंतु तुमने 'समय नहीं मिला' कहकर यह चांस गंवा दिया। तब से मैंने नक्की किया कि यज्ञ कारोबार तुरंत होना चाहिए। मेरे पास जो भी पत्र, ई-मेल आदि आते हैं, उनका 24 घंटे में जवाब देने का प्रयत्न करता हूँ। मैंने डायरेक्ट ब्रह्मा बाबा से डायरेक्शन सुना कि बाप के कार्य में विलंब नहीं होना चाहिए, अब अगर मैं विलंब करूँगा तो ब्रह्मा बाबा के डायरेक्शन का पालन न करने के कारण मुझे सौ गुणा दंड भोगना पड़ेगा। हमारे अन्य भाई-बहनों ने ये डायरेक्शन ब्रह्मा बाबा से नहीं सुने हैं इसलिए अगर वे ऊपर-नीचे करते हैं या देरी करते हैं

तो सौ गुणा दंड नहीं मिलेगा। केवल सुनी-सुनाई बातों के आधार पर डायरेक्शन भंग होगा तो सौ गुणा दंड नहीं मिलेगा।

इस लेख के द्वारा मैं अपने दैवी परिवार के बहन-भाइयों को यह संदेश देना चाहता हूँ कि यज्ञ कारोबार में बेफिकर बादशाह नहीं बनना चाहिए, बाबा ईश्वरीय कारोबार हमें सिखाने के लिए निमित्त बनाते हैं, निमित्त बनने का चांस एक बार ही मिलता है। जब हमारे घर में मम्मा 18 मास रही थी, वे कहती थी, बाबा सबको आगे बढ़ने का स्वर्ण अवसर देते हैं परंतु कई उसको स्वीकार नहीं करते हैं, बाद में पश्चाताप करके कहते हैं, बाबा, हमको दुबारा चांस दो। मम्मा कहती थी – Golden opportunities do not repeat. इसलिए हमारा स्लोगन भी है – अब नहीं तो कब नहीं। जैसे इतिहास में ज्यों और त्यों नहीं आ सकता, ना ही इतिहास की घटनाओं को हम पीछे ले जाकर उनमें कुछ सुधार ही कर सकते हैं। इतिहास तो वास्तविकता के आधार पर चलता है। जो गलती एक बार हुई, उसे इतिहास माफ नहीं करता है बल्कि गलतियों का दंड भुगतना पड़ता है। ईश्वरीय कारोबार परमात्मा द्वारा सिखाया गया कारोबार है इसलिए इस लेख द्वारा मैं सभी बहन-भाइयों को याद दिलाना चाहता हूँ कि यज्ञ कारोबार में त्वरित गति से निर्णय लेना चाहिए। यह पांडव गवर्मेन्ट है, हम निमित्त मात्र हैं। हम समयबद्ध (Punctual) रहेंगे, त्वरित गति से काम करेंगे तो यही संस्कार सतयुगी दुनिया के लिए लेकर जायेंगे। अगर यहाँ ही हमारे में Punctuality नहीं होगी तो सतयुग में भी नहीं होगी। यह तो ऐसा ही होगा जैसे कि ट्रेन की टिकट हमारे पास हो लेकिन हम देरी से पहुँचे और ट्रेन छूट जाये।

कमियों के कारण अगर हम मिले हुए सुनहरे अवसर को खो देते हैं तो हम आगे नहीं बढ़ पायेंगे, वहीं रुक जायेंगे। इसलिए अगर हम सत्यनिष्ठा, मूल्यनिष्ठा और समर्पित भाव से सेवा करते हैं तो उसका फल बहुत ज्यादा मिलता है और हम श्रेष्ठ भाग्य के निर्माण के निमित्त बन सकते हैं। ❖

बाबा कहते

ब्रह्माकुमार नरेन्द्र शुक्ल, सुलतानपुर (उ.प्र.)

परमपिता और परम आत्मा कब से सुनते आए,
पर वो कौन, कहाँ, क्या करता, बता कोई न पाए।
बाबा कहते, मैं बिन्दु ज्योति का, सबको पावन करने,
कलियुग, सतयुग के संगम पर परमधाम से आए।

ज्योति बिन्दु शिव परमपिता है, प्रेम सिन्धु, अति स्नेही,
हम बच्चे कैसे भी हों, वो प्रेम करें सबको ही।
बाबा कहते, मैल विकर्मों की सारी छंट जाती,
सच्चे मन से याद मुझे कर जो बन जाए विदेही।।

कण-कण में भगवान नहीं, माया है अभी समाई,
रंगे-रमे सब इसमें, कहते भी माया दुखदाई।
बाबा कहते, प्रभु याद में रह जो सेवा करते,
उन्हें किसी भी रंग-रूप से माया लुभा न पाई।।

सेवाभाव, सफाई दिल में, होठों पर सच्चाई,
श्रीमत पर चलने वाला ही खिदमतगार खुदाई।
बाबा कहते, जिन्हें इन्द्रियाँ वश में रखना आया,
उन्हें जाल में अपने माया कभी फंसा न पाई।।

सच्ची खुशी नहीं मिलती है, कद, पद या साधन से,
वह मिलती है शुभ संकल्पों, विचार सागर मंथन से।
बाबा कहते, परमपिता को जानो, रिश्ता जोड़ो,
सुखी बना सकते हैं वो ही तुझको तन, मन, धन से।।

घड़ी विनाशी परिवर्तन की निश्चित आन पड़ी है,
बारूदों के ढेर पे सारी दुनिया आज खड़ी है।।
बाबा कहते, तीव्र करो पुरुषार्थ बच्चो वरना,
धर्मराज तैयार हाथ में अपने लिए छड़ी है।।

'अचानक' का पाठ याद कराने वाली घटना

ब्र.कु. सुरेश, शान्तिवन

सन् 1990 में मैं ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़ा और पिछले 25 वर्षों से संस्था के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय (आबू पर्वत) में समर्पित रूप से ईश्वरीय सेवा कर रहा हूँ। तीन मार्च, 2015 को मेरे साथ अचानक एक घटना घटी जिसका उल्लेख मैं इसलिए कर रहा हूँ ताकि आप का भी परमपिता परमात्मा के प्रति अटूट निश्चय बढ़ सके। इस पूरी घटना में मैंने पग-पग पर परमात्मा की अलौकिक शक्ति का अनुभव किया जिसके प्रभाव से कोई दु:ख-दर्द या पीड़ा का अहसास नहीं हुआ।

मुख से निकला, 'बाबा–बाबा'

उस दिन मैं संस्था के कार्यकारी सचिव भ्राता मृत्युंजय जी को अहमदाबाद एयरपोर्ट से लेकर स्टर्लिंग हॉस्पिटल पहुँचा, वहाँ हम संस्था के महासचिव भ्राता निर्वैर जी से मिले। तत्पश्चात् रात्रि 9.45 बजे मैं और भ्राता मृत्युंजय जी शान्तिवन, आबू रोड, राजस्थान के लिए रवाना हुए। रात्रि 11.30 बजे गुजरात स्थित सिद्धपुर में हमारी कार को कुछ गुण्डों ने ज़बर्दस्ती रोका। वे 5 थे। एक ने मेरे पास आकर कहा, 'कार से बाहर निकलो नहीं तो गोली मार देंगे।' फिर जेब से बंदूक निकाली और मेरे चेहरे पर टिका दी। उस समय मेरे मुख से 'बाबा-बाबा' शब्द निकल रहा था। कार का इंजन चल रहा था। उन्होंने कहा, 'कार बंद करो।' फिर अचानक एक ने कार से चाबी निकाल ली। भ्राता जी गाड़ी की पिछली सीट पर सोये हुए थे, वे जाग गए। पहले उन गुंडों ने सोचा था कि मैं अकेला हूँ परन्तु भ्राता जी को देखने के बाद एक ने आसमान में गोली चला दी। भ्राता जी ने कार से उतर कर रोड पर गुज़र रहे एक ट्रक को रोका, फिर एक और गाड़ी हमारी कार के सामने आकर रुक गई। मेरा ध्यान कार की ओर था, तभी एक गुण्डे ने मेरे कान के पास गोली चला दी और तुरन्त भाग गए।

अशरीरी स्थिति का अभ्यास आया काम

मेरे मुख और नाक से खून का फव्वारा निकलना शुरू हो गया। मुझे बाबा का महावाक्य याद आया, 'अचानक का पाठ।' मैं बेहोश नहीं हुआ और हिम्मत रखकर भ्राता जी से कहा, 'एम्बुलेंस के लिए 108 और पुलिस के लिए 100 नम्बर डॉयल कीजिए', ऐसा कहते हुए मैं प्यारे शिवबाबा के पास परमधाम में जाकर उनकी गोद में बैठ गया। बाबा की अलौकिक शक्ति से मुझे कोई दर्द या

भय का अहसास नहीं हुआ। मेरी बुद्धि में केवल यही शब्द गूँज रहा था, 'ड्रामा में मेरा अचानक का पार्ट है, अब घर जाना है।' मैं बहुत समय से अशरीरी स्थिति का अभ्यास भी कर रहा था। वह अभ्यास काम में आ गया और मैं बाबा के पास सहज रूप से पहुँच गया।

अब पूर्ण स्वस्थ हूँ

लगभग 15 मिनट के पश्चात् भ्राता जी मुझे एम्बुलेंस में बैठाकर अहमदाबाद के अपोलो हॉस्पिटल में ले गए। यह यात्रा 2 घण्टे में पूरी हुई। ऐसी दयनीय स्थिति में भी मैंने एम्बुलेंस से स्वयं उठकर बिना किसी सहारे के चलते हुए अपोलो हॉस्पिटल में प्रवेश किया। खून तो बह रहा था लेकिन मैं बेहोश नहीं हुआ था, पूरी घटना को साक्षी होकर देख रहा था क्योंकि बाबा मुझे शक्ति दे रहे थे। मेरी बुद्धि का योग बाबा के साथ था और मैं अनुभव कर रहा था कि मैं बाबा की

गोद में हूँ। दूसरे दिन 4 मार्च, 2015 को प्रात: 11 बजे मुझे ऑपरेशन थियेटर में लेकर गए जहाँ एक्सरे के द्वारा पता चला कि गोली बायीं तरफ गले में फंसी हुई है। डॉक्टरों ने ऑपरेशन करके गोली निकाल दी। फिर एक महीने तक मैं तरल भोज्य पदार्थों का सेवन करता रहा क्योंकि डॉक्टरों ने दोनों तरफ के दांतों को बंद कर दिया था ताकि मैं अतिशीघ्र ठीक हो सकूँ। आज मैं पूर्णत: स्वस्थ हूँ। घटना की सम्पूर्ण जानकारी मधुबन सहित सभी सेवाकेद्रों में पहुँचने पर योग के वायब्रेशन्स द्वारा मुझे शक्ति प्रदान की गई। मैं सभी भाई-बहनों का दिल की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ कि आप सभी की असीम शुभकामनाओं से मुझे एक नया जीवन मिला है। ❖

विचारों को मिली नई दिशा

ब्रह्माकुमार सहदेव चौहान, वजीराबाद, दिल्ली

मैं सिविल सर्विस (आई.ए.एस.) प्रतियोगी परीक्षा का छात्र हूँ। अपनी पढ़ाई में अधिकाधिक लाभ लेने हेतु पिछले 4 साल से गम्भीर रूप से राजयोग के अभ्यास में रत हूँ। मैंने पढ़ा था कि योग परमात्म मिलन और आत्म-दर्शन का माध्यम है, गीता में भी राजयोग की ऐसी ही चर्चा है। इसकी वास्तविक अनुभूति तब हुई जब मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ा और सहज राजयोग का अभ्यास किया।

इससे पूर्व मैं ध्यान-मुद्रा में स्थूल शांति प्राप्त करता था जिसमें भी अधिकांश समय विचारों के दमन व द्वंद्व में निकल जाता था। अब मैंने राजयोग द्वारा विचारों को नयी दिशा दी है और संकल्प परिवर्तन की क्षमता भी अर्जित की है।

सहज राजयोग द्वारा दृढ़ निश्चय, एकाग्रता, शांति, पवित्रता से लौकिक जीवन बेहतर बन रहा है और स्वयं की वास्तविक पहचान से आत्म-अभिमानी स्थिति एवं विश्वपरिवर्तन जैसे वास्तविक कर्त्तव्य की पहचान मिली है। प्रत्येक मानव राजयोग की सहज अनुभूति एवं लाभ प्राप्त कर सकता है। ❖

अंग-संग रखता हूँ बाबा को

ब्रह्माकुमार आदर्श हराळे,
कीर्तिनगर, अकोला (महाराष्ट्र)

मेरी आयु 9 साल है, चौथी कक्षा में पढ़ रहा हूँ। शिव बाबा द्वारा स्थापित ईश्वरीय विश्व विद्यालय की क्लास में भी जाता हूँ। स्कूल की पढ़ाई की वजह से भले ही रोज़ क्लास में नहीं जा सकता पर बाबा को हमेशा अपने संग-संग रखता हूँ। बाबा भी मुझे अपने साथ रखते हैं। मैं और मेरा शिवबाबा हमेशा साथ रहते हैं।

मुझे पता है, बाबा मुझे बहुत प्यार करते हैं। स्कूल में भी मैं और मेरा बाबा साथ-साथ जाते हैं। मुझे स्कूल में दो ट्राफी और चार मैडल मिले हैं, पढ़ाई बहुत अच्छी करता हूँ, परीक्षा परिणाम सदा A+ आता है, शिवबाबा बहुत मदद करते हैं और शिव बाबा को जीवनसाथी, हमसफर, खुदादोस्त समझता हूँ। मैं अच्छा पढ़कर और अच्छा बनकर बाबा का नाम रोशन करूँगा। बाबा से मिलने 31 नवम्बर, 2014 को जब मधुबन आया था तब स्कूल चालू था। मधुबन से आने के बाद स्कूल जाने से डर रहा था। मुझे लगा कि टीचर मुझे बहुत डाँटेगी। मैंने बाबा से कहा, आप ही कुछ जादू करो जो टीचर मुझे डाँटे नहीं और सचमुच जादू हो गया। टीचर ने मुझे डाँटा नहीं। मेरे शिव बाबा ऐसे जादूगर हैं। ❖

सामना करने की शक्ति

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

सामना करना होता है परिस्थिति का, न कि व्यक्ति का। परिस्थितियाँ व्यक्तियों द्वारा भी रची जाती हैं और प्रकृति द्वारा भी पर हर हाल में हमें यह ध्यान रखना है कि हम परिस्थितियों का सामना करके उनका समाधान करें, व्यक्ति का सामना ना करें। व्यक्ति को सह लें, माफ करें, उसकी गलतियों को भूलें या समाएँ, उसके प्रति शुभ भावना रखें पर उससे उलझें नहीं। यदि व्यक्ति में मन को उलझाएँगे तो परिस्थिति भी अधिकाधिक उलझ जाएगी।

योजना बनाएँ नुकसान को रोकने की

एक किसान ने आधी रात उठकर देखा कि कोई उसके खेत में से गठरी भर गेहूँ की फसल चुराकर भाग रहा है, किसान ने उसे पहचान लिया। यह एक परिस्थिति है चोरी की, नुकसान की, इसका सामना करना है। यदि वह उस भागते व्यक्ति को पकड़ने के लिए दौड़े, तो अन्धेरे में दौड़ने में उसे भी नुकसान हो सकता है। यदि पकड़ने में सफल हो जाए और उसकी पिटाई करे तो बात बहुत आगे बढ़कर पीढ़ियों तक की दुश्मनी या कोर्ट-कचहरी के लम्बे मामले में बदल सकती है। अत: उस व्यक्ति को मारने, अपमानित करने की योजना बनाने के बदले भविष्य में ऐसे नुकसान को रोकने की योजना बनानी है। इसके लिए क्रोध या हिंसा या बदले की भावना की बजाय धैर्य, शान्ति, प्रेम और भाई-चारे की भावना से काम लेना है।

मन को शान्त रखकर समाधान खोजें

वह सुबह होने तक मन को शान्त रखे और अपनी मानसिक शक्ति को समाधान की ओर मोड़े। फिर गाँव के किसी विश्वसनीय और विचारशील के आगे यह बात रखे और पूछे, आपके साथ कभी ऐसा हुआ तो आपने क्या किया? क्या आपने भी इस व्यक्ति को कभी चोरी करते देखा है, क्या यह ज़रूरत के लिए चोरी करता है या इसका संस्कार ही चोरी का है। इस प्रकार पूरी तहकीकात के बाद वह निर्णय ले सकता है कि या तो उससे अकेले में बात की जाए और समझाया जाए, या तो कइयों के बीच उसे चेतावनी दी जाए, यदि गरीबी के कारण ऐसा किया तो माफ करते हुए उसकी मदद की जाए, एक-दो रात पुन: छिपकर उसे देखा जाए, इस प्रकार जागरूकता के साथ सारी जानकारियाँ हासिल करके भविष्य में ऐसे नुकसान को रोका जा सकता है, व्यक्ति का सुधार भी किया जा सकता है और अपने मन की शान्ति और आपसी सम्बन्धों को बिगड़ने से बचाया भी जा सकता है।

कर्मक्षेत्र रूपी कुरुक्षेत्र में गुण और शक्तियों रूपी शस्त्र ज़रूरी

हर रोज़ स्कूल जाने के समय बच्चा पेट दर्द का बहाना करता है और ना जाने की ज़िद्द करके बस्ता पटक देता है। यह भी परिस्थति है। यदि आप बच्चे को मारते हैं, कटु शब्द कहते हैं, ज़बर्दस्ती स्कूल बस में धकेलते हैं तो आप बच्चे का सामना कर रहे हैं, परिस्थिति का नहीं। आप कहेंगे, परिस्थिति का रचयिता तो बच्चा ही है। यह ठीक है कि वो रच रहा है पर क्यों रच रहा है? स्कूल टीचर का व्यवहार, आपका व्यवहार, खेल का या अन्य किसी चीज़ का आकर्षण या आपका प्यार – कौन-सी चीज़ उसे खींचती है या रोज़-रोज़ जाना उसे बन्धन लगता है? आपके सामने जो परिस्थिति आई है उसके समाधान के तरीके अपनाइये, टीचर से बात कीजिए, एक दिन स्कूल ना जाने पर सारे दिन के उसके व्यवहार को नोट कीजिए, समझाइये, स्कूल से लौटने पर ज्यादा प्यार देकर देखिए, कहने का अर्थ है कि बच्चे का सामना मत कीजिए, बच्चे को भला-बुरा मत कहिए, इस परिस्थिति के विभिन्न पहलुओं पर चिन्तन करके सही कारण जानकर निवारण कीजिए। यह होगा

शान्त और सहनशील मन से। शान्ति, सहनशीलता और धैर्य मानव की बहुत बड़ी शक्तियाँ हैं। जैसे युद्ध के मैदान में शस्त्रों की हर समय ज़रूरत पड़ती है उसी प्रकार आज के कर्मक्षेत्र रूपी कुरुक्षेत्र में उपरोक्त गुणों और शक्तियों रूपी शस्त्रों की हमेशा ज़रूरत पड़ती है।

काम आता है पहले से किया गया अभ्यास

शस्त्र चलाने का अभ्यास कब किया जाता है? क्या युद्ध के मैदान में? नहीं। युद्ध से बहुत पहले निर्जन स्थानों पर जाकर युद्धाभ्यास किया जाता है। वहाँ कुशल होने के बाद वास्तविक युद्ध में जौहर दिखाया जाता है। इसी प्रकार परिस्थिति आने के बाद हम धैर्य, शान्ति, सहनशीलता का अभ्यास करने लगें तो हार खा लेंगे। परिस्थिति के समय तो पहले से किया गया अभ्यास काम आता है। जैसे बड़ी ज़रूरत (बीमारी, शादी, मृत्यु, गाड़ी, मकान आदि) की पूर्ति के लिए हम धन पहले से जोड़कर रखते हैं। डॉक्टर ने ऑपरेशन बता दिया और हम धन कमाने जाएँ तो काम कैसे चलेगा? शादी या मृत्यु का खर्च आ गया और हम कमाने चलें, तो कैसे बात बनेगी। ऐसे प्रसंग आने पर तो जो रोज़ कमा रहे थे, उसे भी बन्द करना पड़ता है और जमा स्टॉक का प्रयोग करना होता है। आत्मा की शक्तियों के सम्बन्ध में भी ऐसे ही है। किसी भी प्रतिकूल बात के आने पर सही शक्ति के जमा स्टॉक का प्रयोग करें तो परिस्थिति हिल-डुल कर चली जाएगी पर हमें नहीं हिलाएगी।

उठते ही स्मृति लाओ, मैं फरिश्ता हूँ

जैसे खाली चीज़ ज्यादा हिलती है उसी प्रकार गुणों और शक्तियों से खाली मन भी परिस्थिति आने पर बहुत हिलता है। मन को भरपूर करने के लिए इसका सम्बन्ध उनसे जोड़ना होगा जो स्वयं सदा हर गुण, हर शक्ति से भरपूर हैं। ऐसे तो एक पिता परमात्मा ही हैं। उनसे मन का कनेक्शन जोड़कर हम मन को शक्तिशाली बना सकते हैं। इसके लिए सबसे उत्तम समय है अमृतवेले का। भगवान शिव कहते हैं, ''अमृतवेले उठते ही स्मृति में लाओ – मैं कौन? फरिश्ता हूँ। जो फरिश्ता बनेगा, उसके सामने अगर कोई भी परिस्थिति आयी या कोई भी विघ्न आया, तो बाप स्वयं छत्रछाया बन जायेंगे।"

हर दिन नई–नई शक्तियाँ अपने में भरें

आजकल साइन्स ने ऐसी मशीनें बनाई हैं कि एक ही से विभिन्न चीज़ें मिल जाती हैं जैसे एक ही मशीन में ठण्डे, गर्म, ताज़ा – तीनों प्रकार के पानी के बटन होते हैं, जो बटन दबाओ उसी प्रकार का पानी मिल जाता है। इसी प्रकार परमात्मा शिव भी एक हैं पर उनसे जो चाहिए वो प्राप्ति हो सकती है। अमृतवेले के शुद्ध, शान्त वातावरण में हम अपने मन के संकल्प का स्विच ऑन करें कि आज हमें सामना करने की शक्ति चाहिए। संकल्प करते ही ज्योतिबिन्दु परमात्मा पिता से किरणों के रूप में सामना करने की शक्ति, ज्योतिबिन्दु आत्मा में समाने लगेगी। हमें अनुभव है कि यदि किसी को बिजली का करन्ट छू जाए तो सारे शरीर में सिहरन दौड़ जाती है और उसे कई दिन तक भी उस सिहरन की स्मृति बनी रहती है। इसी प्रकार परमात्मा पिता से भी जो शक्तियों का करंट निकलता है वह आत्मा में आनन्द, खुशी और सर्व प्राप्तियों की लहरें पैदा करता है जिससे मन में यह चिन्तन चलता रहता है कि ''अहो सौभाग्य! मुझे पिता परमात्मा का सान्निध्य मिला, मैंने भीतर के नेत्र से उन्हें एकदम सामने देखा, उन्होंने अपनी शक्तियों का सम्पूर्ण वर्सा मुझ पर उड़ेल दिया, मैं आत्मा प्रभु की विश्वास-पात्र बनी हूँ, उन्होंने मुझे कितना शक्तिशाली बना दिया।" अमृतवेले की प्राप्ति के इस चिन्तन के साथ-साथ शक्ति प्राप्ति का वो दृश्य भी सारा दिन बार-बार भीतर के नेत्र के सामने प्रकट होता रहेगा। परमात्मा पिता से

प्राप्त शक्ति का हम सारा दिन प्रयोग करेंगे तो पाएंगे कि परिस्थिति या तो आती ही नहीं है और यदि आ भी जाती है तो प्राप्त की गई शक्ति से तुरन्त उसका समाधान हो जाता है। ये शक्तियाँ ही हमारी सुरक्षा करती हैं, कर्मक्षेत्र पर हमें विजयी बनाती हैं और परमात्मा पिता के प्यार और निश्चय के बल से बड़ी बात को भी छोटा बना देती हैं। घटना के वशीभूत होने की बजाय, उससे फायदा उठा आगे बढ़ने का मार्ग दिखाती हैं। हम अभ्यास द्वारा हर दिन नई-नई शक्तियों को अपने में भर सकते हैं। कभी समाने की शक्ति, कभी समेटने की शक्ति, कभी व्यर्थ को भुलाने की शक्ति, कभी समर्थ को याद करने की शक्ति.... इस प्रकार रोजमर्रा काम में आने वाली शक्तियाँ योगाभ्यास द्वारा अपने में भरें और सशक्त आत्मा बनें, यही पिता परमात्मा की हमारे प्रति शुभ आशा है। ❖

जेल में सच्ची शान्ति का अनुभव

योगिता सपकाले, उप-कारागार, जलगाँव

मैं एक गरीब घर की बेटी हूँ। मेरी शादी 15 साल की उम्र में हो गई थी। ज़िंदगी में बहुत तूफान आये, उनको पार करते-करते मैं तंग हो गई थी। माँ-बाप के घर महालक्ष्मी के उपवास किये। शादी के बाद भी पूजा, पाठ, उपवास करती थी लेकिन मेरे मन को कभी शान्ति नहीं मिली। हमारे घर में बार-बार झगड़े चलते थे। एक दिन मैं और मेरी जेठानी दूर के रिश्तेदार के यहाँ मृत्यु प्रसंग में गए। वहाँ हमारी मुलाकात एक ब्रह्माकुमारी बहन और भाई से हुई। जब हम सभी रोने लगे तो उस ब्रह्माकुमारी बहन ने कहा कि रोना बंद करो, यह माताजी मरी नहीं हैं, केवल उनका शरीर बदली हुआ है, आत्मा अजर, अमर है, कभी मरती नहीं है। वापस लौटे तो मन में बार-बार आत्म-ज्ञान के बारे में सवाल उठने लगे।

उसके बाद परिस्थिति ने ऐसा मोड़ लिया कि पड़ोस के एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई और उसके केस में मैं, मेरे पति और घर के 13 सदस्य जेल में आ गये। पड़ोसियों ने हम सभी को जेल में डलवा दिया। बाद में दूसरों की जमानत हो गयी पर मैं और मेरे पति अभी भी जेल में हैं जहाँ सन् 2012 में मेरी मुलाकात ब्रह्माकुमारी बहन से हुई। वे जेल में आकर सबको ज्ञान सुनाती थी। मैं भी ज्ञान सुनने लगी। उनके द्वारा मेरे कानों में यह संदेश आया कि परमपिता शिव परमात्मा इस धरती पर आये हुए हैं। ये शब्द सुनते ही अहसास हुआ कि भगवान मिल गये और मन को इतनी शान्ति मिली जो आज तक नहीं मिली थी। तब से एक भी दिन मुरली और योग मिस नहीं करती हूँ। सुबह और शाम का योग और मुरली जैसे मेरे प्राण बन गये हैं।

जेल में नई-नई माँ-बहनें आती रहती हैं, उनको मैं शिवबाबा का संदेश देती रहती हूँ। मुरली भी समझाती हूँ। सारे विश्व की सभी आत्माओं को शान्ति के प्रकम्पन देती हूँ। मेरे सामने कितनी भी कड़ी समस्या आये तो भी डगमग नहीं होती हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे पिता शिवबाबा मेरे साथ हैं और दृढ़ निश्चय है कि हम निर्दोष सिद्ध होंगे। मैं अकेली नहीं हूँ, सबसे बड़ा आधार मेरा शिवबाबा मेरे साथ है। हो सकता है, यह मेरे पिछले जन्मों के कर्मों का हिसाब हो। अपने अच्छे व बुरे कर्मों का हिसाब यहाँ ही चुकाना है। ❖

दुखों का अंत हो गया

ब्रह्माकुमारी रंजना आंधले, अहमदपुर (महाराष्ट्र)

मेरा लौकिक जन्म एक प्रतिष्ठित धनवान और धार्मिक परिवार में हुआ। शादी के बाद ससुराल घर में झगड़ों के कारण काफी परेशान हुई। पारिवारिक परेशानी और पैसे की खींचातान से तंग होकर कुछ दिनों के बाद मेरे पति शराब पीने लगे। इस कारण हम संयुक्त परिवार से अलग कर दिए गए। ऐसे में वे शराब के और ज्यादा अधीन हो गये। फिर तो ज़िंदगी नरक हो गई। वे शराब पीकर आते, हंगामा करते, मुझसे और बच्चों से मारपीट करते। हर शाम मैं और बच्चे डरे-सहमे रहते कि पता नहीं आज क्या हो जाएगा। कुछ सालों के बाद पति ने शराब के नशे में ही शरीर छोड़ दिया। शादी के बाद के इन 16 सालों तक मैंने कड़ी सज़ा काटी।

मिली शान्ति की दुनिया

मेरे पास कुछ भी नहीं था, ना धन, ना धन कमाने का साधन, क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, कैसे बच्चों को संभालूँ, यह चिंता खाए जा रही थी। ऐसे लग रहा था जैसे दुखों का सैलाब उमड़ पड़ा हो। परेशानियों में जैसे पागल हो रही थी। मैं पढ़ी-लिखी भी नहीं हूँ। पति जिस शिक्षण संस्थान में काम करते थे, बाद में वहाँ लैब असिस्टेंट की नौकरी मिल गई। मैं अज्ञानतावश सदैव पति की याद में रोती थी। संस्थान की एक शिक्षिका बहन ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान में चलती हैं, उन्होंने मुझे ईश्वरीय ज्ञान की बातें सुनाईं और ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर लेकर गई। पहले ही दिन मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं अशांति की, दुख की दुनिया छोड़कर किसी दूसरी दुनिया में आयी हूँ जहाँ शांति ही शांति और मन का सुकून है। फिर मैं रोज़ सेवाकेन्द्र पर जाने लगी, ईश्वरीय ज्ञान सुनने लगी। वो शिक्षिका बहन मुझे स्कूल में ज्ञान की बातें सुनाती जिससे मैं भगवान को पहचान सकी। मेरे सभी दुखों का अंत हो गया। भक्ति के फलस्वरूप मुझे भगवान मिल गये जैसे अंधकार भरी रात्रि में ज्ञानसूर्य प्रकट हो गये।

भगवान मेरे टीचर बने

एक दिन सेवाकेन्द्र पर एक परीक्षा रखी गई थी जिसमें कुछ लिखना था। जब सब लिखने लगे तो मैं बाबा की याद में बैठ गई पर मैं रोज़ की तरह एकाग्र नहीं हो पा रही थी। ऐसे लग रहा था जैसे बाबा मुझे कह रहे हैं कि तुम भी लिखो, तुम सर्वशक्तिमान की बच्ची हो, ऐसी कोई बात नहीं जो तुम ना कर पाओ। मैंने बहन जी से

डायरी-पेन माँगे और लिखने बैठी। सबने बहुत कुछ लिखा पर मैंने सिर्फ चार लाइनें ही लिखी। उस दिन से बाबा ने मुझे लिखना सिखा दिया। ड्यूटी के दौरान जितना भी समय मिलता है उसमें मुरली लिखती हूँ, बाबा मुझे मदद भी करते हैं। आज मैं क्लास में भी मुरली का सार लिख सकती हूँ।

मिल रहा है आदर भरा वर्ताव

एक बार मेरा बेटा मुझसे कहने लगा कि मुझे ज्वेलरी का धंधा करना है, उसके लिए 12-15 लाख रुपये लगेंगे, आप घर बेच दो। सभी संबंधी मुझे कहने लगे, घर बेचकर कहाँ रहोगी? अगले दिन अमृतवेले बाबा से पूछा तो ऐसे महसूस हुआ जैसे बाबा कह रहे हों, बच्ची, तुम्हें इससे भी अच्छे घर में रहना है और मैंने घर बेचकर उसे पैसे दे दिये। उसे बहुत अच्छी सफलता मिली। आज मेरे

दोनों बेटे ज्वेलरी की दुकान अच्छे से चलाते हैं। आमदनी भी बहुत अच्छी है। बड़ा बेटा एक दिन भी बाबा की दृष्टि लिए बिना घर से नहीं निकलता। दोनों बहुत शांत और सहयोगी हैं। संस्थान के जो प्रोफेसर पहले मुझे तकलीफ देते थे, वो आज बाबा के ज्ञान को समझने से मेरे साथ आदर का बर्ताव करते हैं। संबंधी जो मुझे पागल कहते थे, अब ज्ञान में चलते हैं। मुझे वो सब मिला जो मैंने सोचा भी न था। किन शब्दों में बाबा का शुक्रिया अदा करूँ, दिल बस यही गाता रहता है,

एक तू जो मिला, सारी दुनिया मिली,
खिला जो मेरा दिल, सारी बगिया खिली।

❖

छूटा 51 साल पुराना दुर्व्यसन

ब्रह्माकुमारी इन्द्रा बहन, वडोदरा (गुजरात)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थानीय शाखा में सात दिन का ज्ञान-कोर्स करने के बाद मैं प्रतिदिन ईश्वरीय महावाक्यों का श्रवण करने लगी और राजयोग के अभ्यास के लिए योग-कक्ष में भी बैठने लगी। जब परमात्मा पिता पर ध्यान एकाग्र करती थी तो ऐसा लगता था कि बाबा मुझसे कुछ मांग रहे हैं। क्या मांगते हैं, कुछ समझ में नहीं आता था। महसूस होता था, बाबा कह रहे हैं, बच्ची, तुम जो कचरा खाती हो वह मुझे दे दो। मुझे लगता था कि मैं कचरा कहाँ खाती हूँ। बाबा हर बार कहते हुए महसूस होते, कचरा कब दोगी? मुझे संकल्प चलते कि बाबा ऐसी टचिंग क्यों देते हैं?

एक मास में एक किलो तम्बाकू

मैंने इस महसूसता की बात ब्रह्माकुमारी बहन को बताई। उन्होंने पूछा, आपमें कोई दुर्व्यसन है क्या? मैंने कहा, तम्बाकू खाती हूँ। बहन ने कहा, बस, बाबा आपसे यही मांगते हैं। मैं बोली, मैं तम्बाकू नहीं छोड़ सकती, नौ साल की आयु से खा रही हूँ, अब मेरी उम्र साठ साल की है, कैसे छोडूँ, नहीं छोड़ सकती। इसके बाद मैंने बहन को बताया कि तम्बाकू की बुरी लत के कारण तो माँ और भाई की बहुत मार खाई। शादी के बाद पति को मालूम हुआ तो वे भी मारने लगे और तम्बाकू उठाकर फेंकने लगे इससे मुझे दौरे आने लगे और मुँह से झाग निकलने लगा। पति घबरा गये और मुझे तम्बाकू खाने की छुट्टी दे दी। पहले एक मास में 100 ग्राम तम्बाकू खाती थी, फिर 1 किलो तम्बाकू खाने लगी।

न तम्बाकू की याद आई, न दौरे आए

कुछ समय बाद मैं आबू बाबा के घर गई। वहाँ भी तम्बाकू खाने लगी तो सबने टोका, कहा, इसे कचरे में डाल दो। मैंने कहा, तम्बाकू नहीं मिला तो मुझे दौरे आएंगे। ब्रह्माकुमारी बहन ने कहा, तुम बाबा को बोलो, मैं यह तम्बाकू का कचरा आपको दे रही हूँ, मुझे तम्बाकू की याद आये तो अमृत पिलाना। उनके कहने से बाबा को तम्बाकू दे दिया। इसके बाद आज तक न तम्बाकू की याद आई और ना दौरे आए। इस तरह एक पल में 51 साल पुराना दुर्व्यसन छूट गया। बाबा ने कमाल कर दिया। वाह बाबा वाह! ❖

बहुत तड़पी थी प्रभु के लिए

ब्रह्माकुमारी रेखा सिंह, अछल्दा, औरैया (उ.प्र.)

अगस्त का महीना था। सावन की बरसात की तरह ज्ञान की बरसात के साथ एक माता जी और कन्या का घर में आगमन हुआ। गृहकार्य में व्यस्त थी परन्तु स्वभाव अनुसार आगन्तुकों का स्वागत किया और उन्हें बिठाया। माता जी बोली, बहन जी, भगवान आये हैं, उनका संदेश देने के लिए हम आये हैं। 'भगवान आये हैं, कहाँ आये हैं, क्या सन्देश है', मन में अनेक जिज्ञासाएँ जाग उठीं। उन्होंने अपने तरीके से थोड़ा समझाया। उनके दिए प्रश्नों के उत्तरों से मैं सन्तुष्ट न हुई। साथी कन्या ने गीत सुनाया, 'ईश्वर अपने साथ है, डरने की क्या बात है.....'। पहली बार ऐसा गीत सुना, मन में खुशी महसूस हुई। ईश्वर की ओर बढ़ने की यह पहली सीढ़ी थी। अधिक जानकारी के लिए निमित्त बहन से मिलने की सलाह देकर वे लौट गए।

भक्ति मार्ग में अटूट निष्ठा के साथ मैं पूरे पुरुषोत्तम मास व्रत रखती थी। अन्य व्रत भी पवित्र धारणाओं के साथ चलते रहते थे। निमित्त बहन से मुलाकात होने पर मैंने कहा, मुझे बस भगवान से मिलना है। मन में सोच रही थी, 'कैसा होगा मेरा प्रभु, उसके लिए कितनी तड़पी हूँ, कितना प्यार है उससे, मेरे प्यार या पुण्य के फल के रूप में मुझे वह मिलेगा।' बहन जी के कहने पर मेरा साप्ताहिक कोर्स आरंभ हुआ। शिव और शंकर के रहस्य ने ही ज्ञान का तीसरा नेत्र खोल दिया।

दुर्गा के मंदिर में माँ का शृंगार करती, भोग के बाद आरती गाती लेकिन गाते-गाते सोच में पड़ जाती थी कि कौन से भगवान को मैं माँ कहती हूँ, कौन है माँ से बड़ा? शिव-शंकर के महान अन्तर के ज्ञान से सब कुछ स्पष्ट होने लगा। भक्ति और ज्ञान का फर्क समझ में आने लगा। परमात्मा के महावाक्यों (मुरली) द्वारा सभी राज़ स्पष्ट होने लगे।

परमात्म मिलन की अनुभूति

नये साल में मेरा पूरे परिवार के साथ आबू पर्वत आना हुआ। नया जीवन, नई दुनिया, नया प्यार, नया परिवार, नई अनुभूति, नया सुख, पवित्रता के वातावरण में सब कुछ नया-नया मिला। जब बाबा की कुटिया में गई तो ऐसा लगा कि मैं इतने दिन प्राणप्रिय से दूर क्यों रही। पलकें झपकने का नाम नहीं ले रही थी। आंसुओं की झड़ी से ऐसा लग रहा था जैसे जन्म-जन्म के पाप के खाते को बाबा आज ही धो देंगे। तभी अचानक लगा, बाबा मुसकराये और मेरे गालों को सहलाया। जीवन का सबसे सुखद क्षण था वो। मन ने कहा, काश! समय ठहर जाये ताकि यह सुखद स्पर्श होता ही रहे लेकिन तभी साथी बहन ने मुझे स्पर्श कर, समय को हिला दिया। उसी शाम को ही बाबा मिलन था जिसे देख मन गद्‌गद् हो उठा। आँखें नम थीं, पूछ रही थी, बाबा, क्यों इतने दिन अपने प्यार से वंचित रखा? बाबा के महावाक्यों में मेरे सब प्रश्नों के समाधान समाये थे। मैं प्यार के सागर को देखती रही, प्यार से भरपूर होती रही। बाबा ने अमर भव का वरदान और याद-प्यार देकर नये साल की बधाई दी। दिल के अन्दर से यही गीत गूँजा – मेरी तकदीर की तस्वीर बनाने वाले, दिल तुझे याद करे...।

दिल उसे धन्यवाद देता है, देता ही रहता है। कितना सुन्दर जीवन दिया है। मैं तो उसे ढूंढ़ती ही रह जाती परन्तु उसने निमित्त आत्माओं को मेरे घर भेजकर मुझे अपना बनाया। ऐसा परमपिता, परमशिक्षक, परम सद्‌गुरु मिला है जो हर पल साथ रहता है। आज पूरा घर आश्रम बन गया है, नित्य ईश्वरीय ज्ञान की मुरली गूंजती रहती है। वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य, भगवान बाप मिला, खुदा दोस्त मिला और क्या चाहिए। सर्व प्रति यही सन्देश है कि भगवान वास्तव में इस धरा पर आ चुके हैं, उनसे मिलकर, सुख-शान्ति और पवित्रता का अखुट खजाना ले लें।

भगवान के आदेश का पालन

ब्रह्माकुमार शोभाराम सिंह बैस, देवीपुर, सतना (म.प्र.)

भगवान कहते हैं, बच्चे, गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए कमल फूल समान पवित्र बनो। देह अभिमान से कर्मेन्द्रियाँ चलायमान होती हैं और काम विकार की उत्पत्ति होती है लेकिन तुमको कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना है।

जब मैं भक्तिमार्ग में चल रहा था तो अपने को देह समझता था। देहभान में रहने से देह अभिमान रहता था कि मैं पुरुष हूँ और अपनी युगल को भी दैहिक दृष्टि से देखता था। जब उसे पत्नी की भावना से देखता था तो उसके शरीर पर आकर्षित हो जाता था, मन विचलित होता था तथा कर्मेन्द्रियाँ चलायमान होती थीं और काम विकार की उत्पत्ति होती थी। लेकिन जब मैं ज्ञान मार्ग में आया तो मुझे पता चला कि मैं देह नहीं, देही हूँ। यह देह (शरीर) मुझ देही (आत्मा) के कर्म करने का साधन है जिससे कर्मेन्द्रियाँ चलायमान नहीं होतीं, काम विकार की उत्पत्ति नहीं होती और ब्रह्मचर्य या पवित्रता का पालन अपने आप हो जाता है।

दुनिया वाले कहते हैं कि अगर आग और कपूस (घास) को एक जगह रख दिया जाये तो किसी न किसी दिन कपूस अवश्य जल जाएगी। लेकिन मैं दावे के साथ कहता हूँ कि मैं गृहस्थ व्यवहार में रहता हूँ, परिवार के साथ रहता हूँ, पुत्रों व पुत्रवधुओं तथा पत्नी के साथ रहता हूँ और पवित्र रहता हूँ। हम दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे को आत्मिक दृष्टि से देखते हैं, एक-दूसरे को परमपिता परमात्मा की आत्मा रूपी संतान समझते हैं। एक-दूसरे को इस सृष्टि ड्रामा में साथी पार्टधारी समझते हैं जिससे कर्मेन्द्रियाँ चलायमान नहीं होतीं। अब तो काम विकार का पता ही नहीं चलता कि वह कहाँ चला गया। रामायण में लिखा है – यह गुण साधन से नहिं होई।

प्रभु की कृपा पाव कोई कोई।।
नाथ विषय सम मद कछु नाही।
मुनि मन मोह करइ क्षण माही।।

अर्थात् काम विकार के समान कोई विकार या मद नहीं है, जो मुनियों के मन को क्षणमात्र में मोहित कर लेता है लेकिन जिसके ऊपर दयासागर शिव भगवान की विशेष या महान दया होती है उसके कामादि सभी विकार अपने आप छूट जाते हैं। रामायण में यह भी लिखा है –

क्रोध मनोज लोभ मद माया।
छूटैं सकल राम की दाया।

अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि सभी विकार दयासागर परमात्मा की दया से अपने आप छूट जाते हैं। काम विकार मनुष्य को नर्क में ले जाता है तथा ब्रह्मचर्य (पवित्रता) मनुष्य को स्वर्ग में ले जाता है। गीता में लिखा है –

त्रिविधं नरकस्येद द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।

भगवान कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ नरक के द्वार हैं अर्थात् सर्व अनर्थों की जड़ हैं, आत्मा का नाश करने वाले हैं अतः कामादि सभी विकारों को छोड़ देना चाहिए। रामायण में भी इसी बात को तुलसीदास जी ने यूँ लिखा है –

काम, क्रोध, मद, लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुवीरहिं भजहु भहहिं जेहि संत।।

अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि सभी विकार मनुष्य को नर्क में ले जाने के रास्ते हैं इसलिए मनुष्य को इन कामादि विकारों को छोड़कर भगवान को याद करना चाहिए। भगवान की याद से ही विषयसागर को पार कर क्षीर सागर में जायेंगे।

जब हम किसी स्त्री को कुदृष्टि से देखते हैं तो मन विचलित होता है, काम विकार की उत्पत्ति होती है। लेकिन जब हम उसी स्त्री को सुदृष्टि से देखते हैं, मां, बहन की भावना से देखते हैं तो मन विचलित नहीं होता, काम विकार

की उत्पत्ति नहीं होती। इसलिए रामायण में लिखा है –

जननी सम जानहि पर नारी।
धन पराव विष से विष भारी।।

अर्थात् दूसरी स्त्रियों को मां-बहन की दृष्टि से या भावना से देखना चाहिए। मां-बहन के समान जानना व मानना चाहिए। दूसरे के धन को बड़े से बड़ा विष मानना चाहिए।

आज माताओं-बहनों पर बहुत अत्याचार हो रहे हैं। ऐसे ही अत्याचारी लोगों को बाबा दुर्योधन, दुशासन या शिशुपाल कहता है। परनारी को मां-बहन की दृष्टि से देखने से उन पर होने वाले अत्याचार अपने आप बन्द हो जायेंगे। इसलिए बाबा कहते हैं कि बच्चे, काम महाशत्रु है, इस पर ही जीत पानी है। कोई भी मनुष्य पवित्र बनने बिगर वैकुण्ठ नहीं जा सकता। कहा गया है कि जहाँ दिन होता है वहाँ रात नहीं होती और जहाँ रात होती है वहां दिन नहीं होता। जहां प्रकाश होता है वहां अंधकार नहीं होता और जहां अंधकार होता है वहां प्रकाश नहीं होता। इसी प्रकार जहां काम होता है वहां राम (शिवबाबा) नहीं होता और जहां राम होता है वहां काम नहीं होता है।

कई बहनें बहुत फैशन करती हैं, वे अपने शरीरों को खूब सजाती हैं। उनको देखकर पुरुष मोहित हो जाते हैं और काम विकार की उत्पत्ति होती है। रामायण में लिखा है –

विषय कुपथ पाइ अंकुरे।
मुनिहु हृदय का नर वाकुरे।।

अर्थात् जब कुपथ (सजी हुई सुन्दर औरत) को देखकर मुनियों के हृदय में काम का बीज अंकुरित हो जाता है तो बिचारे पुरुषों में काम विकार उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। जितना वे बहनें अपने हड्डी-मांस के ढांचे को सजाती हैं, प्लास्टिक रूपी चमड़ी को सुन्दर बनाती हैं उतना यदि वे उस ढांचे को चलाने वाली चेतन शक्ति आत्मा को सजाएं, सुन्दर बनाएं तो उनके जीवन का उद्धार हो जाए। इसलिए बाबा कहते हैं कि बच्चे किसी के रंग-रूप में मत फंसो। गीता में लिखा है –

तेषामहं ...ऊर्ध्वं न संशयः।।

भगवान कहते हैं कि जो कोई सच्चे दिल से मेरे में मन-बुद्धि को लगाता है और अपना सब कुछ मुझे समर्पण कर देता है और पूर्ण रूप से मेरे आश्रित हो जाता है तो उसके जीवन की सम्पूर्ण जिम्मेवारी मैं स्वयं अपने हाथ में ले लेता हूँ और उसकी जीवन नइया को इस मृत्युरूप संसार सागर से सहज ही पार कर देता हूँ और वह परमधाम में मेरे पास निवास करता है, इसमें कोई संशय नहीं है। इसलिए बाबा कहते हैं कि बच्चे, योगी बनो पवित्र बनो। पवित्रता ही सुख, शान्ति की जननी है, पवित्रता से ही परमधाम जायेंगे। ❖

चलो अपने वतन

ब्रह्माकुमारी निर्मला, जबलपुर (म.प्र.)

चलो अपने वतन, चलो अपने वतन,
इस दुनिया से अब ना लगाओ लगन।
हम आये कहाँ से, है जाना कहाँ?
झूठे सपनों का बोझा है ढोना यहाँ।
व्यर्थ संकल्पों का अब कर दो हवन।।
चलो अपने वतन.....

दृष्टि धुंधली हुई, राह दिखती नहीं,
धूप-सी तप रही, छाँव मिलती नहीं।
ज्ञान का ले सहारा, खिलाओ चमन।।
चलो अपने वतन.....

तेरा प्रभु है सहारा, तू मन को लगा,
योगबल से सोई आत्मा को जगा।
भृकुटि में चमके सितारा, प्रकाशित हो मन।।
चलो अपने वतन.....

वेला आई मिलन की, जो मन में बसी,
हर्षित हो चलो, सबको बाँटो खुशी।
सजनियों को बुलाये शिव प्यारा सजन।।
चलो अपने वतन.....

मधुबन का तट हो..तब प्राण तन से निकलें

ब्रह्माकुमारी भगवती, हाथरस (उ.प्र.)

मेरा जन्म कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा के समीप बन्दी नामक स्थान पर हुआ। माता बहुत छोटी उम्र में ही चल बसी। पिताजी बेहद धार्मिक प्रवृत्ति के और कई भाषाओं के विद्वान थे। उन्होंने दूसरा विवाह न करके स्वयं ही हम भाई-बहनों की पालना की, माता की कमी महसूस न होने दी। समय बीतता गया, विवाह हुआ, संतान भी हुई। भक्ति के संस्कार पिताजी से ही मिले थे। भक्ति करते हुए भी अन्दर में प्रश्न रहता था कि इतने सारे भगवानों में से असली भगवान है कौन? मंदिरों में, गुरुद्वारों में, मस्जिदों में, मज़ारों पर, पीर, फकीरों के सामने माथा टेकते-टेकते इसी आशा में समय बीतता गया कि कभी तो वह मिलेगा। अनेक व्रत, आस-पास के तीर्थस्थल, परिक्रमा, रामायण, सत्संग, भागवत आदि किये सिर्फ उसी एक की खोज में। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय रूपी ज्ञान यज्ञ में आने से पूर्व नवधा भक्ति (गायन, वंदन, स्मरण, पूजन इत्यादि) भी किया करती थी।

लग्न, विश्वास और भक्ति में भावना की दृढ़ता

कुछ ग्रामीणों के साथ ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा नंगे पैर, उफनते बरसाती नालों, तालाबों, कंटीली झाड़ियों, कंकड़ों, पत्थरों को पार करते हुए, केवल दो जोड़ी कपड़ों के साथ, कृष्ण बोल, हरी बोल, राधे-राधे के नाम से, रास्ते के मध्य पड़ने वाले कुण्डों में स्नान करते हुए सिर्फ नौ दिन में पूरी करके आयी। अन्य भी कई कष्टसाध्य यात्राएँ कीं। सन् 1987 में ब्रह्माकुमारी आश्रम से ईश्वरीय ज्ञान का साप्ताहिक पाठ्यक्रम पूरा किया। भोलेनाथ शिव बाबा का सत्य परिचय जानने और मिलन मनाने के बाद नया अलौकिक जन्म हुआ। फिर भक्ति ऐसे ही अलग हो गई जैसे दूसरी सीढ़ी पर पहुँचने के बाद पहली सीढ़ी अलग हो जाती है। पावनता का वरदान तो पुत्र के जन्म के बाद मिल ही गया था।

महत्वाकांक्षाओं का परिवर्तन

हर माँ की इच्छा होती है कि उसका पुत्र सुन्दर, सुशील बहू लेकर आये जो उसकी सेवा कर सके। परन्तु इकलौता पुत्र होने के बावजूद मुझे अपनी महत्वाकांक्षाओं को त्यागने में सोचना नहीं पड़ा क्योंकि पुत्र-जन्म पर यह संकल्प उठा था कि जिसने दिया है उसी की सेवा में इसे लगाना चाहिए। सोचती थी कि कहीं आश्रम में, मंदिर में या किसी गुरु के चरणों में रख दूँगी,

समय-प्रति-समय मिलकर आती रहूँगी। बाद में भोलेनाथ शिव बाबा से सत्य ईश्वरीय ज्ञान मिलने पर पुत्र को भी ज्ञानमार्ग का परिचय कराया। संतोष इस बात का है कि वह (दिनेश भाई) भी साथ रहकर ज़िम्मेवारी पूरी करते हुए ज्ञान-योग-सेवा-धारणा के मार्ग पर तत्पर है।

खूब सुनी लोगों की बातें

यह कैसी विडम्बना है कि आज जब किसी के घर पर कोई पहुँचा हुआ महात्मा, संत, साधु, शंकराचार्य, साध्वी आ जाये तो लोग पैरों में पड़ते हैं, नतमस्तक होते हैं, घर-आँगन को शुद्ध हुआ और खुद को धन्य मानते हैं परन्तु जब उनका ही कोई पुत्र या पुत्री उस मार्ग पर चलने लगता है तो लोग कहते हैं कि दिमाग खराब हो गया है क्या? क्या ज़रूरत थी इतना पढ़ाने-लिखाने की! मैंने भी लोगों की बातें

खूब सुनीं कि वंश का क्या होगा, समाज क्या कहेगा? पति ने भी पहले हल्का विरोध किया परन्तु बाद में उन्होंने भी ईश्वरीय ज्ञान को समझा।

मेरी दो भतीजियाँ ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों को सम्भालते हुए कल्याणकारी सेवा में लगी हुई हैं। जानवरों सहित संसार के समस्त प्राणी मात्र से प्रेमवत् व्यवहार रखने का प्रयास रहता है। जो भी संपर्क में आते हैं उन सभी आत्मिक भाइयों को ईश्वरीय संदेश सुनाने में सुकून का अनुभव होता है। आज 75 वर्ष से अधिक आयु में भी यही प्रयास करती हूँ कि जिस पुत्र को ईश्वर के लिए अर्पित किया है उससे अपने लिए कोई सेवा न लूँ। जैसे भक्ति मार्ग में गीत गाया जाता है कि यमुना जी का तट हो, मधुबन का वंशीबट हो, मेरा सांवरा निकट हो तब प्राण तन से निकलें, उसी अनुसार अब दिल में यही अन्तिम इच्छा है कि आबू पर्वत का तट हो, ज्ञान अमृत मुख में हो, मेरा बाबा (शिव परमात्मा) निकट हो तब प्राण तन से निकलें। ❖

हर पल सहायक बाबा

ब्रह्माकुमारी रेखा, अशोगी, बैरगनियाँ (बिहार)

मुझे ज्ञान में आये 8 साल हुए हैं। पहले मैं हमेशा घर-परिवार में दुखी और उदास रहती थी। मोहल्ले की एक हमदर्द ने मुझसे कहा, तुम हमेशा उदास रहती हो, मैं तुम्हें ऐसी जगह ले चलती हूँ जहाँ प्यार ही प्यार और ढेर सारी खुशियाँ मिलती हैं। मैंने कहा, ठीक है, जल्दी वहाँ ले चलिए। कुछ ही दिनों बाद हमारे मोहल्ले में ही ब्रह्माकुमारी मातायें और बहनें चित्र-प्रदर्शनी लगाने आ पहुँचीं, फिर ज्ञान का कोर्स भी कराया। मुझे कोर्स बहुत पसंद आया। तब से लेकर आज तक मैं बाबा के ज्ञान में चल रही हूँ और चलती रहूँगी।

एक दिन किसी बात को लेकर मेरा मन बहुत दुखी और उदास था। दोपहर का समय था, घर में अकेली थी, मैं बाबा के फोटो के सामने बैठकर मन ही मन उनसे बातें करने लगी और रोने लगी, कहने लगी, बाबा, आप मुझे अपने पास बुला लो। आप जो कहोगे, जैसा कहोगे, मैं वैसा करूँगी, सिर्फ मुझे अपने पास बुला लो। मैं बहुत रो-रोकर यह कह रही थी। इतने में देखा कि बाबा मुझसे कह रहे हैं कि मेरी बच्ची, तुम मत रो, मैं हूँ तेरा और अपने हाथों से मेरे आँसू पोंछने लगे और कहा, बच्ची, ये आँसू नहीं, मोती हैं, इन्हें व्यर्थ मत गंवाओ। इतने स्नेह भरे बोल कानों में पड़ते ही मैं खो गयी बाबा के प्यार में। आँसू निकलने बंद हो गए। वाह बाबा वाह... आपके एक बोल में इतना प्यार है कि आपके प्यार से तृप्त हो गयी।

एक बार रात को दो बजे आँखें खुलीं और मैं बाबा की याद में बैठ गई। इतने में बाबा हीरे-मोती और रत्नों से भरा थाल लेकर आए और कहने लगे, लो बच्ची। मैंने कहा, बाबा, मुझे ये सब नहीं चाहिएँ। बाबा ने कहा, लो बच्ची, ये तुम्हारा कमाया हुआ धन है। मैंने कहा, नहीं बाबा, मुझे ये सब नहीं चाहिएँ, मुझे तो सिर्फ आपका साथ और प्यार चाहिए, इसके सिवाय कुछ नहीं चाहिए। बाबा ने बड़े प्यार से कहा, ले लो बच्ची, ये तुम्हारा है। फिर मैंने वह थाल ले लिया। बाबा ने मुझे हार पहनाया और तिलक लगाया और बोले, बच्ची, तुम विजयी रत्न हो, शिव शक्ति हो और महान आत्मा हो। ये तीन वरदान बाबा ने दिए। धन्य हो बाबा। आप सचमुच प्यार के सागर हो। हर पल मेरी सहायता करते रहते हो। आपको पाकर मैं धन्य-धन्य हो गई। ❖

श्रेष्ठ भाग्य का आधार – श्रेष्ठकर्म

ब्रह्माकुमार रामेश्वर साहू, फिंगेश्वर (छ.ग.)

तमन्नाओं की दुनिया तो हर इंसान बनाता है
मगर पाता है, जो यहाँ तकदीर लेकर आता है।

होश संभालते ही मनुष्य अपने भविष्य सुखमय जीवन को लेकर अनेक प्रकार की तमन्नाओं का ताना-बाना बुनने लगता है जिसमें बंगला, महंगी गाड़ियाँ, नौकर-चाकर, मोटा बैंक-बैलेन्स, सुख-साधनों की भरमार तथा परिवार और समाज में मान-सम्मान आदि शामिल होते हैं।

श्रेष्ठ कर्म ही श्रेष्ठ भाग्य का आधार है

हम देखते हैं कि इस दुनिया में कुछ इंसान ऐसे हैं जो बिना कुछ खास पुरुषार्थ किये ही सबकुछ हासिल कर लेते हैं। इसके विपरीत, कुछ इंसान ऐसे भी होते हैं जो बचपन से लेकर बुढ़ापे तक कड़ी मेहनत करने के बाद भी कुछ खास उपलब्धि नहीं जुटा पाते हैं। तब मुख से अनायास ही ये बोल निकल पड़ते हैं कि सब किस्मत का खेल है। एक तरफ कहते हैं कि जो व्यक्ति भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ धरे बैठे रहता है उसे कुछ भी हासिल नहीं होता है। दूसरी तरफ यह भी कहते हैं कि संसार में किस्मत वालों को ही सब कुछ मिलता है। दोनों बातें विरोधाभासी होते भी तर्कसंगत लगती हैं। प्रश्न उठता है कि तकदीर या भाग्य है क्या चीज़? अध्यात्म कहता है, श्रेष्ठ कर्म ही श्रेष्ठ भाग्य का आधार है। वर्तमान समय हमें जो कुछ भी प्राप्त हो रहा है, हमारा भाग्य है, इसको हमने पूर्वजन्मों में बनाया था। आज जो हम दूसरों को दे रहे हैं, यह हमारा कर्म है, जो हमें भविष्य में भाग्य के रूप में प्राप्त होगा। अत: वर्तमान का कर्म ही भविष्य में भाग्य का आधार है। वर्तमान रूपी नींव जितनी मज़बूत होगी, भविष्य रूपी इमारत उतनी ही शक्तिशाली होगी।

कर्मफल के लिए आवश्यकता है धैर्य की

अक्सर कहा जाता है कि जब पूर्वजन्मों के पुण्य कर्मों का उदय होता है तब हमें किसी भी क्षेत्र में सफलता मिलती है। कड़ी मेहनत के बावजूद भी अगर सफलता नहीं मिल रही है तो मन में प्रश्न उठता है कि क्या हमने पूर्वजन्मों में कोई भी पुण्य कर्म नहीं किया था? इस विषय में कर्म सिद्धांत यही कहता है कि पुण्य कर्मों का फल चखने के लिये धैर्य की आवश्कता होती है। जैसे कोई-कोई बीज दो-तीन महीने में फल देता है, कोई छ: माह या साल में और कोई-कोई बीज अपने जीवन काल में सिर्फ एक ही बार फल देता है, वैसे ही कर्म रूपी बीज का फल भी कभी तुरंत मिल जाता है, कभी छ: माह या साल भर में मिलता है। कभी जीवन भर इंतज़ार करना पड़ता है तो कभी अगले जन्म में मिलता है।

जीवन रूपी वृक्ष की जड़ है वर्तमान

पूर्वजन्मों में हमने जो कुछ भी किया है उसे भूतकाल में जाकर सुधार नहीं सकते क्योंकि वह समय हाथ से निकल चुका है। सिर्फ वर्तमान को ठीक कर लेने से तीनों काल स्वत: ही ठीक हो जाते हैं इसलिए कहते हैं – भूत सपना, भविष्य कल्पना, सिर्फ वर्तमान है अपना। जैसे पेड़ की जड़ में पानी डालने से हर पत्ते तक पानी स्वत: ही पहुँच जाता है, वैसे ही जीवन रूपी विशाल वृक्ष की जड़ वर्तमान है। इसको जितनी पवित्र भावना व श्रेष्ठ कर्मों रूपी पानी से सींचेंगे, उतना ही भविष्य में सुख, शांति से भरपूर फल मिलेगा। अत: निराश होकर श्रेष्ठ कर्मों का साथ न छोड़ें, ये परछाई की तरह हमारे साथ चलते हैं। बार-बार असफल होने पर भी हिम्मत और धैर्य का साथ न छोड़ें। सच तो यह है कि दुनिया में हर सफल इंसान के पीछे असफलता की लंबी कहानी जुड़ी हुई है।

मान लीजिए, एक किसान ने किसी कारणवश पिछली बुआई में खेतों में बीज नहीं बोये पर वर्तमान बुआई में धरती

को अच्छी तरह तैयार करके बीज बोता है, खरपतवार एवं कीड़ों से उसकी रक्षा करता है तो निश्चित है कि वह भविष्य में अच्छी फसल का हकदार होगा जिससे वह पिछली बार न बो सकने की कमी की भी भरपाई कर सकेगा। इसी प्रकार हमारे वर्तमान के श्रेष्ठ कर्मों से तीनों कालों की श्रेष्ठ पालना हो जाती है क्योंकि वर्तमान ही पहले भूत फिर भविष्य (फल भविष्य में मिलने के कारण) बन जाता है।

त्याग से बनता है भाग्य

दुनिया के कई अमीर एवं ऊँचे पद पर आसीन लोगों को देखकर कइयों के मन में संकल्प उठता है कि यहाँ तक पहुँचने के लिए इन्होंने अवश्य ही कोई हेरा-फेरी की होगी परन्तु अतीत तलाशने पर पता चलता है कि उस मंज़िल तक पहुँचने के लिए उन्होंने कितने कष्ट, धूप और बरसात सहे, कितना त्याग किया, तब कहीं जाकर वे इस मुकाम पर खड़े हैं। बिना त्याग और तपस्या के कोई भी ऊँची मंज़िल प्राप्त नहीं हो सकती चाहे वह भौतिक मंज़िल हो या फिर आध्यात्मिक मंज़िल। प्यारे शिवबाबा भी कहते हैं, मीठे बच्चे, 'त्याग से ही बनता है भाग्य। जितना आप अपने जीवन को त्याग रूपी तपस्या से तपाओगे उतना ही ऊँचा भाग्य बनेगा।' संसार को कर्म प्रधान कहा गया है इसलिए पहले है कर्म अर्थात् पुरुषार्थ और बाद में है प्रालब्ध अर्थात् फल। आत्मा आती ही है इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कर्म करने के लिए। प्रत्येक कर्म उसके भाग्य का निर्माण करता है। अच्छे कर्म से अच्छे और बुरे कर्म से बुरे भाग्य का निर्माण होता है जिसे दुर्भाग्य कहा जाता है। अधिकतर लोगों की मान्यता है कि तकदीर हाथों की लकीरों में होती है परंतु तकदीर हाथों में नहीं, आत्मा में होती है इसलिए कहते हैं, तकदीरवानों के ललाट में तेज एवं दिव्यता होती है। कई भविष्यवक्ता माथा देखकर ही लोगों का भविष्य बता देते हैं। अमेरिका की एक तीस वर्षीय युवती के दोनों हाथ नहीं हैं, इसके बावजूद घर में दैनिक कामकाज से लेकर पढ़ाई, लिखाई, कम्प्यूटर चलाना इत्यादि कार्य वे पैरों से करती हैं। उन्होंने उस समय पूरी दुनिया को अचंभे में डाल दिया जब पायलेट बनकर दोनों पैरों से हेलिकाप्टर चलाकर दिखाया। कहते भी हैं,

तकदीर के खेल में निराश नहीं होते,
ज़िंदगी में कभी उदास नहीं होते।
हाथों की लकीरों पर यकीन मत करना,
क्योंकि तकदीर उनकी भी होती है
जिनके हाथ नहीं होते।।

आत्मा है एक रिकार्डर की तरह

शरीर के अंगों की बनावट व हाथों की लकीरें पूर्वजन्मों के कर्मों के अनुसार होती हैं। हमारे कर्मों में जितनी दिव्यता और निर्लिप्तता रहेगी, उतने ही संस्कार भी दिव्य बनेंगे। कहते हैं, खाली हाथ आये थे, खाली हाथ जाना है परन्तु विचारणीय बात है कि हाथ भी तो साथ नहीं जाते, चिता की आग में शरीर के साथ वे भी जलकर राख हो जाते हैं। परम सत्य यह है कि न ही कोई खाली हाथ आता है और न ही कोई खाली हाथ जाता है। आत्मा पूर्वजन्मों के संस्कार लेकर आती है और जीवन भर किये हुए कर्मों के संस्कार लेकर जाती है। आत्मा एक रिकार्डर की तरह है जो शरीर रूपी मशीन का आधार लेकर हर संकल्प, बोल, कर्म को रिकार्ड करती है। बाद में यह शरीर रूपी मशीन तो खत्म हो जाती है परन्तु रिकार्ड की गई सारी गतिविधियाँ आत्मा अपने संग ले जाती है।

वर्तमान में जीना सीखें

जो कुछ भी हमारे साथ हो रहा है उसके ज़िम्मेवार हम स्वयं हैं। दूसरों पर दोषारोपण करने से परिस्थितियाँ बदल नहीं जायेंगी। परिस्थितियों, समस्याओं को यह समझकर स्वीकार करें कि हमारा किया हुआ ही हमें मिल रहा है, अब हिसाब-किताब चुकता हो रहा है। इससे सहज ही हल्के रहेंगे। भूतकाल के बारे में सोचकर पश्चाताप न करें बल्कि वर्तमान को श्रेष्ठ बनाने का पुरुषार्थ करें। जैसे नदी

की बहती धारा को रोक नहीं सकते और न ही उसका पीछा कर सकते हैं, वैसे ही जो बीत चुका है, न तो हम उसे रोक सकते हैं और न ही उसके पीछे जा सकते हैं। इसलिए बीत गई सो बीत गई, आगे की सुध लेनी है। यह पांच हज़ार वर्षों का सृष्टि ड्रामा बहुत सुंदर एवं युक्तियुक्त बना हुआ है। इसमें किसी का पार्ट बदल नहीं सकता। हरेक को अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। जब भूतकाल को स्वयं भगवान भी नहीं बदल सकते तो हम उसके बारे में सोच-सोचकर अपना वर्तमान क्यों खराब करते हैं? सदा खुशहाल रहना है तो वर्तमान में जीना सीखें। हमेशा याद रखें – भूतकाल खर्च किया हुआ धन है, भविष्य जमा किया हुआ धन है और वर्तमान ही नगद धन है, जिसको हम जितना चाहें, जैसे चाहें वैसे उपयोग कर सकते हैं। छत्तीसगढ़ में एक पुरानी कहावत का भावार्थ इस प्रकार है कि बुआई करने के समय किसान इधर-उधर घूमता रहे या दिन-रात आलस्य-वश सोता रहे और फसल पकने पर औरों को फसल काटता देख ईर्ष्या करे तो उसे क्या कहेंगे? अत: प्यारे शिवबाबा कहते हैं – मीठे बच्चो, वर्तमान समय पुरुषोत्तम संगमयुग है। सृष्टि चक्र का प्रभात अर्थात् अमृतवेला है, जन्मजन्मातर के लिये श्रेष्ठ भाग्य रूपी भवन बनाने की नींव है। जितना भाग्य बनाना चाहो, बना लो। अभी नहीं तो कभी नहीं। ❖

मन की सैर

ब्रह्माकुमारी प्रीति, नवाबगंज (उ.प्र.)

सैर करना अर्थात् घूमना। कहते हैं कि सुबह-सुबह ठण्डी हवा में सैर करने वाले व्यक्ति सदा शारीरिक रूप से स्वस्थ रहते हैं, उन्हें कोई भी बीमारी आदि नहीं हो सकती। सैर पर जाने के लिए हम हमेशा अच्छी जगह अर्थात् शान्त और शुद्ध वातावरण का ही चयन करते हैं लेकिन कभी-कभी न चाहते हुए भी ऐसी जगह पर हमारा घूमना हो जाता है जहाँ हम नहीं घूमना चाहते हैं।

यदि हमें भीड़-भाड़, शोरगुल वाली अथवा गन्दगी वाली जगह पर से गुज़रना पड़े, तो कैसा महसूस करते हैं? घुटन का अनुभव करते हैं। आत्मा को भी यदि सात्विक विचारों में व परमात्मा के महावाक्यों के विचार सागर मंथन में व्यस्त रखते हैं तो यह शान्ति का अनुभव करती है, जो उसे अच्छी लगती है क्योंकि शान्ति आत्मा का स्वधर्म है। जिस प्रकार स्थूल गन्दगी की बदबू से हमारी सांस घुटने लगती है उसी प्रकार व्यर्थ की बातें आत्मा को घुटन का अनुभव कराती हैं। आत्मा इस घुटन से निकलना चाहती है लेकिन चाहकर भी नहीं निकल पाती क्योंकि मन वश में नहीं किया, वो बेलगाम घोड़े की तरह भाग रहा है।

कहते हैं, 'मन ही मित्र, मन ही शत्रु है' हम जो रिश्ता जोड़ना चाहें मन के साथ जोड़ सकते हैं, चाहें तो मित्र बना लें, चाहें तो शत्रु। मन का कार्य ही है संकल्प करना। यदि सकारात्मक सोचते हैं तो मन मित्र बन जाता है और सुखद अनुभूति कराता है और यदि नकारात्मक संकल्प करते हैं तो मन शत्रु बन जाता है और दुख, कष्ट पहुँचाता है। कहने का तात्पर्य है कि मन को मित्र बनाकर उसे शुद्ध और सात्विक विचारों रूपी वातावरण में सैर कराएँ, इससे वह स्वस्थ बन जाएगा और आत्मा शक्तिशाली बन जाएगी।

मन की सैर के लिए बाबा ने हमें एक नहीं, कई स्थान दिए हैं जैसे कि शान्तिधाम, सुखधाम, सूक्ष्मलोक, बाबा का कमरा, बाबा की कुटिया, हिस्ट्री हॉल आदि-आदि। यदि बाबा के कहे अनुसार इन स्थानों पर मन को सैर कराते हैं तो निश्चित ही हम सभी आत्माएँ सर्वशक्ति-सम्पन्न बन जाएँगी और विश्व-परिवर्तन के महायज्ञ में सम्पूर्ण सहयोग देंगी। ❖

अच्छी सोच है अच्छे दिनों का आधार

ब्रह्माकुमार ओंकार चन्द शर्मा, चण्डीगढ़

दुनियाभर में सभी लोग इच्छा रखते हैं कि जीवन में अच्छे दिन आएं। अच्छे दिनों की चाहत रखना अच्छी बात है परन्तु उस चाहत की पूर्ति हेतु कदम उठाना समय की मांग है।

हमारे अच्छे दिन हम ला सकते हैं, दूसरे नहीं

सबसे पहले तो यह जान लें कि अच्छे दिन यानि खुशियों भरे दिन। हमारे अच्छे दिनों में अवरोध कोई और नहीं बल्कि हमारी सोच व मानसिकता है। जब तक हम अपनी सोच को सही नहीं करेंगे और सकारात्मक रवैया नहीं अपनाएंगे तब तक अच्छे दिनों का स्वप्न मात्र कोरी कल्पना ही रहेगा। कई दफा हालात को बदलना मुश्किल होता है पर ऐसे मौके पर भी कम से कम अपने ख्यालात तो बदले ही जा सकते हैं। अपनी सोच को नई दिशा देने के लिए न तो ज्यादा धन की आवश्यकता है और न ही संसाधनों की। बस चाहिए तो दृढ़ इच्छाशक्ति, जो हमारे अंदर ही है। आवश्यकता है उस इच्छाशक्ति को व्यवहार में लाने की। इसके लिए हमें स्वयं से वायदा करना होगा कि हम अपने अच्छे दिन लाने के लिए अच्छी सोच विकसित करने की ओर कदम बढ़ाएंगे। मेरी मानिए, हम अपने विचारों की गुणवत्ता पर ध्यान देते हुए छोटे-छोटे कदम भी अगर आगे बढ़ाएंगे तो शीघ्र ही अच्छे दिनों के समीप पहुँच जाएंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि हम ऐसा कर सकते हैं। याद रखें कि हमारे अच्छे दिन हम ही ला सकते हैं, दूसरे नहीं।

यह नहीं सिखाया कि सोचना कैसे है?

आज संसार में मनुष्य ने जितना भौतिक विकास किया है, उतना पहले कभी नहीं किया था। लेकिन आज मनुष्य जितना परेशान, चिंतित व भयभीत है, उतना पहले कभी नहीं था। कारण स्पष्ट है कि बाहर के विकास के प्रति तो ध्यान दिया गया पर मन के विकास के प्रति ज़रा भी सोचा नहीं गया। परिणामस्वरूप दिन प्रति दिन मनुष्य का मन निर्बल, नकारात्मक और कर्मेन्द्रियों व विषय-विकारों के अधीन होता गया। बचपन से लेकर हमें माता-पिता, मित्र-सम्बन्धियों व शिक्षकों ने उठना-बैठना, बातचीत करना आदि हर बात सिखाई पर कभी यह नहीं सिखाया कि सोचना कैसे है? और यह सीखना सबसे महत्वपूर्ण व ज़रूरी है क्योंकि विचारों से ही हमारी ज़िंदगी बनती है। यदि हम अपने मन को सही सोचने की ट्रेनिंग दे दें तो ज़िंदगी बहुत खूबसूरत हो सकती है। जिंदगी में खुशियों की बहार आ सकती है और अच्छे दिनों की शुरूआत हो सकती है।

दुनिया मिलाएगी हमारे सुर में सुर और ताल में ताल

हम जो बार-बार सोचते हैं, वैसा ही हम महसूस करते हैं और वैसा ही हम बन जाते हैं। विचार ही हमारे बोल व कर्म के आधार हैं। हमें अपने विचारों के बारे में सचेत रहना होगा और उन्हें सावधानी से चुनना होगा। हम अपनी ज़िंदगी के बेहतरीन मूर्तिकार व रचनाकार हैं क्योंकि हम अपने संकल्पों से अपनी मूर्ति खुद बनाते हैं। यदि हम चिंतन करेंगे कि हम भाग्यवान हैं, सफलता हमारे गले का हार है, हमारे जीवन में खुशियाँ ही खुशियाँ हैं, हम सेहतमंद व दौलतमंद हैं, सब हमारे अपने हैं तथा चारों ओर प्यार ही

प्यार है तो ऐसा ही होने लगेगा। सारी दुनिया हमारे सुर में सुर व ताल में ताल मिलाएगी और इन्हें हकीकत में बदल देगी।

समस्याएँ हैं कमज़ोर मन की रचना

संसार की सभी छोटी-बड़ी समस्याओं का समाधान सकारात्मक चिंतन में है। वास्तव में समस्याएं व विघ्न कमज़ोर मन की रचना हैं। जिसका मन शक्तिशाली है उसको पहाड़ जैसी परिस्थितियां भी राई तो क्या रूई से भी हल्की प्रतीत होती हैं। नकारात्मक विचार मन की शक्तियों को क्षीण करके उसे कमज़ोर बना देते हैं जबकि सकारात्मक विचार मन की शक्तियों को बढ़ा देते हैं। इसलिए ही नकारात्मक व व्यर्थ चिंतन से छोटी-छोटी समस्याएं भी विकराल रूप धारण कर लेती हैं। यह बात आज वैज्ञानिक तौर पर भी साबित हो चुकी है कि सकारात्मक विचार किसी भी नकारात्मक विचार से सैकड़ों गुणा ज्यादा ताकतवर होते हैं। जब जीवन के किसी मोड़ पर कठिन समस्याओं से सामना हो जाए और अगर हम सोचने लगें कि मेरे पास ही समस्याएं क्यों आती हैं, मेरी तो किस्मत ही खराब है, कोई मेरा साथ नहीं देता, शायद भगवान भी मेरे से नाराज़ हैं, मेरे तो बुरे दिन चल रहे हैं, तो समस्याएं हम पर हावी हो जाएंगी और खुशी चेहरे से छूमंत्र हो जाएगी।

दुनिया में ऐसा कोई ताला नहीं जिसकी चाबी न हो

हम समस्याओं से घबराने व परेशान होने की बजाय अगर ये मान लें कि समस्याएं मुझे आगे बढ़ाने के लिए आई हैं, यह मेरी परीक्षा हो रही है जिसमें मुझे हर हालत में पास होना है, मेरे साथ सर्वशक्तिमान परमात्मा हैं, जहाँ परमात्मा स्वयं छत्रछाया बन कर खड़े हों वहां समस्याएं ज्यादा देर खड़ी नहीं रह सकतीं, समस्याएं बहादुर लोगों के पास ही आती हैं, कमज़ोरों के पास नहीं, मैं समस्याओं का डट कर मुकाबला कर सकता हूँ, मैं शेर हूँ और समस्याएं मेरे लिए चींटी से भी छोटी हैं, समस्या आई है तो जाएगी भी ज़रूर, इस प्रकार के विचारों से बड़ी आसानी से हंसते-हंसते उन्हें पार किया जा सकता है। मन को समझा दें कि जैसे दुनिया में ऐसा कोई ताला नहीं है जिसकी चाबी न बनी हो वैसे ही ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान न हो। समस्याएं होते हुए भी, सही नज़रिया रखने से हम मुसकराते हुए आगे बढ़ सकते हैं और गलत सोच के कारण परेशान व चिंतित होकर हाथ पर हाथ धरे बैठे भी रह सकते हैं।

कहते हैं कि अगर इरादे मज़बूत तो कोई भी मजबूरी आपको मंज़िल तक पहुँचने से नहीं रोक सकती। यहाँ सकारात्मक सोच के आधार पर नामुमकिन को मुमकिन करके जीवन्त उदाहरण पेश करने वाली 27 वर्षीया अरुणिमा सिन्हा का ज़िक्र करना सही होगा। अप्रैल, 2011 को देश की होनहार फुटबाल खिलाड़ी अरुणिमा ट्रेन में यात्रा कर रही थी। बरेली के पास कुछ बदमाशों ने उसकी चेन छीनने की कोशिश की। इस बहादुर लड़की ने साहस दिखाकर विरोध किया तो उसे चलती ट्रेन से बाहर धक्का दे दिया गया। उसकी बाईं टांग बुरी तरह से एक अन्य ट्रेन के नीचे आने से चकनाचूर हो गई और दाईं टांग में अनेक फ्रैक्चर्स हो गए। इस दिल दहलाने वाले हादसे में उसे बांई टांग गँवानी पड़ी और दांई टांग में भी रॉड डाली गई।

जब सारा देश इस घटना से बुरी तरह से स्तब्ध था तब इस बहादुर लड़की ने दिल्ली में एम्स अस्पताल में इलाज करवाते हुए मन से हार नहीं मानी। उसने उस वक्त सोचा कि मुझे कुछ ऐसा कर दिखाना है कि लोग मुझे दया व तरस की दृष्टि से न देखें। उसने बिस्तर पर लेटे-लेटे योजना बना ली कि उसे अब विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट पर जाकर तिरंगा लहराना है। उसके शक्तिशाली और सकारात्मक विचारों की कमाल देखिए कि हादसा होने के 2 साल के पश्चात् 21 मई, 2013 को एक पैर से ही उसने एवरेस्ट की ऊंचाई नाप डाली। एवरेस्ट पर पहुँचने वाली दुनिया की पहली विकलांग महिला पर्वतारोही बनकर उसने एक इतिहास बना डाला। यह भयंकर हादसा भी उसकी हिम्मत और सपनों के आगे छोटा पड़ गया। उसने

सिद्ध करके दिखाया कि अगर इरादा पक्का हो तो कुछ भी असम्भव नहीं। उसने विकलांगता की परिभाषा भी बदल डाली। उसका कहना है कि सबसे बड़ा विकलांग वही है जो यह मान बैठता है कि वह अब कुछ नहीं कर सकता।

हर संकल्प में है रचनात्मक शक्ति

हमें यह गहरा रहस्य ज्ञात रहे कि हमारे प्रत्येक संकल्प में रचनात्मक शक्ति है। यदि मन में शक्तिशाली व श्रेष्ठ संकल्प हों तो हमारे सभी कार्य सफल हो सकते हैं। अत: किसी भी कार्य से पहले सोच लें कि मेरी सफलता हुई पड़ी है, तो सफलता अवश्य ही हमारे कदम चूमेगी। इसी तरह यात्रा से पहले सोचें कि हमारी यात्रा निर्विघ्न रहेगी, खेल को खेलने से पूर्व संकल्प कर लें कि हमारी जीत निश्चित है, परीक्षा से पहले ये विचार मन में लाएं कि मुझे सब प्रश्नों के उत्तर आते हैं और इन्टरव्यू से पूर्व सोचें कि हमें अवश्य चुना जाएगा।

सर्व के प्रति भाई-भाई की दृष्टि – यही है समाधान

व्यक्ति के नज़रिये में बदलाव लाकर ही उन सभी सामाजिक अपराधों एवं समस्याओं का समाधान किया जा सकता है जहां पुलिस, कानून, कोर्ट और सरकार के प्रयास असफल सिद्ध हो रहे हैं। आजकल महिला असुरक्षा व महिला भ्रूण-हत्या – दो बहुत बड़े खतरे बन कर सामने आ रहे हैं। महिलाएं न तो पैदा होने से पहले सुरक्षित हैं और न ही पैदा होने के बाद घर-परिवार में। रक्षक ही भक्षक बनते जा रहे हैं। इन्सान की गिरी हुई सोच ही इसका प्रमुख कारण है और विडम्बना यह है कि सोच को सुधारने के लिए बड़े स्तर पर कोई प्रयास नहीं हो रहे। समस्या की जड़ों को काटने की बजाय पत्तों को काटा जा रहा है। केवल कानून व पुलिस का डर ही अपराध-मुक्त समाज का निर्माण नहीं कर सकता। इसके लिए लोगों को आध्यात्मिकता व जीवन मूल्यों से जोड़ना होगा। उन्हें महिलाओं के प्रति दैहिक दृष्टि व काम वासना जैसे मनोविकारों को समाप्त करने के लिए प्रेरित करना होगा। यदि हम दैहिक नाते से भाई-बहन और आत्मिक नाते से भाई-भाई की दृष्टि सर्व के प्रति रखेंगे तो ही इस समस्या से निजात मिल सकती है। राजयोग मेडिटशन का अभ्यास मनोविकारों पर जीत पहनने व सकारात्मक सोच विकसित करने के लिए हमें सशक्त बनाता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेवाकेन्द्रों पर राजयोग नि:शुल्क सीखा जा सकता है। ❖

जाग पड़ो नवयुवक

ब्रह्माकुमार वीरेन्द्र, कासगंज (उ.प्र.)

जाग पड़ो नवयुवक विश्व के, नव प्रभात को आने दो,
बीते कल की बातों को अब , जाने भी दो, जाने दो।
जाग पड़ो.....

ये कलियाँ खिलने वाली तुमको ही देखें बेचारी,
भूल गये हो क्यूँ तुम अपने गुलशन की ज़िम्मेदारी,
फर्ज़ निभाकर अपना, इनको खिलने दो, मुसकाने दो।
जाग पड़ो.....

जगा रहा अज्ञान नींद से तुम्हें पिता शिव, अब जागो,
आलस की वेला नहीं है ये, उठो, बढ़ो, आलस त्यागो,
त्याग से तुम्हारे भाग्य जगत का बनता है, बन जाने दो।
जाग पड़ो.....

इस दुनिया का जीवन तुमको नया बनाना है, सुन लो,
अब हिन्दू-मुस्लिम के झगड़े में नहीं आना है, सुन लो,
जाति-धर्म की दीवारों को, हर मन से मिट जाने दो।
जाग पड़ो.....

दिलवाले हो तुम, अब सबको ये 'आईना' दिखला दो,
शान्ति-प्रेम से सबको जीवन, जीने का ढंग सिखला दो,
झुलस रहे जो गम की चिता में, उन्हें चैन अब पाने दो।
जाग पड़ो.....

धैर्य से समाधान

ब्रह्माकुमारी शकुंतला, बहल (हरियाणा)

परिवार या संगठन में किसी के थोड़े सख्त स्वभाव को देखकर हम सोचते हैं, यह ऐसा क्यों करता है? इसको समझ क्यों नही आती? भगवान इसको सद्बुद्धि क्यों नहीं देते? और तो सभी ठीक चलते हैं.....यही एक है हमारे परिवार में, गाँव में, मुहल्ले में। इसी के कारण सबकी शान्ति भंग हो रही है.....।

अधिक देखरेख के पात्र

देखिए, हम बहुत सारे कपड़े वाशिंग मशीन में डालते हैं। मशीन सबकी बराबर धुलाई करती है परन्तु फिर भी किसी कपड़े की कॉलर या बाजू साफ नहीं होती, तब हमें कभी भी क्रोध नहीं आता कि पूरा कपड़ा साफ हो गया फिर ये हिस्से क्यों नहीं साफ हुए? हम उस कपड़े को मशीन से बाहर निकालकर उसके मैले हिस्से पर फिर से साबुन घिसते हैं, ब्रश घिसते हैं और उसको भी बाकी कपड़ों के बराबर कर देते हैं। हमने ऐसा क्यों किया? क्योंकि हमें समझ है कि कॉलर और बाजू शरीर के उस भाग पर होते हैं जहाँ मैल अधिक चिपकता है इसलिए इन पर अतिरिक्त मेहनत करनी ही पड़ेगी। इसी तरह से यदि कोई व्यक्ति ज्यादा ही ज़िद्दी है, क्रोधी है या अहंकारी है तो समझ लीजिए कि वह ऐसे ही किसी खराब माहौल, संग, वातावरण या परिस्थिति में रहा है जिससे उस पर इन बुरे संस्कारों की, विकारों की धूल कुछ ज्यादा ही जम गई है इसलिए वह घृणा व क्रोध का पात्र नहीं अपितु दूसरों से कुछ अधिक संभाल या देखरेख का पात्र है। उस पर भी प्यार का ब्रश व धीरज का साबुन प्रयोग करें तो वह भी आम लागों में शामिल हो जाएगा।

धैर्य का स्टॉक समाप्त हुआ तो क्रोध निकला

कई बार किसी महिला की गोद में बच्चा अचानक रोने लगता है। महिला उसे बार-बार प्यार-पुचकार से चुप कराती है। कभी किसी वस्तु की तरफ ध्यान बँटाना चाहती है, कभी खिलौना देती है परन्तु बच्चा चुप होने का नाम नहीं लेता है। बच्चे के रोने का कारण उसे कुछ समझ नहीं आ रहा होता है। बच्चे को चुप कराने की उसकी सारी विधियाँ खत्म हो चुकी होती हैं तब फिर वह अन्तिम विधि – थप्पड़ का प्रयोग करती है। अब तो बच्चा दुगुनी आवाज़ में रोना शुरू देता है। महिला ने देखा कि थप्पड़ से तो बात बनने की बजाय और ही बिगड़ गई तो वह प्यार-पुचकार वाली विधि पर पुन: आ गई लेकिन बच्चा चुप होने में अब और अधिक समय लगायेगा। गहराई से विचार करने पर हम पाएँगे कि अन्दर धीरज व सहनशीलता की कमी होने के कारण माँ ने ऐसा किया। जब महिला का धैर्य का स्टॉक समाप्त हो गया तब क्रोध निकल आया पर समाधान कहाँ हुआ? और ही समस्या बढ़ गई। यदि लगातार धैर्य रखकर पुचकार देती रहती तो बच्चा चुप हो जाता और एक 'महात्मा' को थप्पड़ मारने का उसका विकर्म न बनता।

धीरज और सहनशीलता हैं प्रतिरोधक शक्तियाँ

अक्सर हम यह सुनते हैं कि वह मान ही नहीं रहा था, गाली दिये ही जा रहा था, तब मैंने भी.....लेकिन हमने उसके गलत व्यवहार के कारण क्रोध नहीं किया बल्कि अपने धीरज का स्टॉक समाप्त होने के कारण गलत प्रतिक्रिया की। धीरज और सहनशीलता आत्मा की प्रतिरोधात्मक शक्तियाँ हैं। जैसे शरीर की प्रतिरोधात्मक शक्तियों को बढ़ा दिया जाए तो प्रदूषित वातावरण या बदलते मौसम के कारण होने वाली बीमारियों से बचा जा सकता है, ऐसे ही आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा धीरज, शान्ति, सहनशीलता जैसे मूल्य आ जाने से नकारात्मक व्यवहार वाले के सामने भी हम धैर्यवान व शान्तचित्त रह सकते हैं।

इसी बात को हम एक अन्य उदाहरण से भी समझ

सकते हैं। शरीर के किसी अंग के कभी बीमार हो जाने पर हम उसको पूरा आराम देते हैं, उसकी अधिक संभाल करते हैं, दवा लगाकर, मालिश करके उसे ठीक कर लेते हैं। कभी ख्याल नहीं आता कि उसे काट कर फेंक दें। शरीर, विभिन्न कर्मेन्द्रियों का समूह है और परिवार-समाज भी विभिन्न संस्कारों के लोगों का समूह है जिसमें नकारात्मक संस्कारों की बीमारी का सामना करना पड़े तो धीरज+प्यार+सहनशीलता के सम्मिश्रण की दवाई सबसे श्रेष्ठ दवाई है। इसका कोई संलग्न कुप्रभाव भी नहीं है। यह दवाई दीर्घकालीन असरकारक है जबकि क्रोध आदि से एक बार तो लगता है कि काम बन गया परन्तु जल्दी ही पहले से भी अधिक बिगड़ जाता है। ❖

गा रहा है रोम-रोम

सरिता यादव, गोरखपुर (यू.पी.)

ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले मेरा मन हमेशा अशान्त रहता था। अपने दो बच्चों पर हमेशा गुस्सा करती रहती थी, घर का माहौल युद्ध के मैदान जैसा रहता था। जीवन में कमी महसूस होती थी। ऐसा लगता था कि सब कुछ छोड़कर कहीं चली जाऊँ क्योंकि सभी मेरे साथ बुरा करते हैं। ज़िन्दगी की गाड़ी दिशाहीन हो चुकी थी।

मेरे पड़ोस में रहने वाली बहन ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाती है। मुझे भी चलने के लिए कहने लगी लेकिन हर बार कोई न कोई व्यवधान आ जाता था। शिवरात्रि के दिन भगवान शिव की पूजा करके मैं रो रही थी। घर आकर पता चला कि पड़ोस की बहन के यहां झण्डारोहण है। मैं वहाँ गई, मन में भगवान शिव के ही विचार चल रहे थे। उस दिन ब्रह्माकुमारी बहनों को देखकर, उनकी बातें सुनकर बहुत ही शान्ति महसूस हुई। अगले दिन सेवाकेन्द्र पर गई। निमित्त बहन ने बहुत ही अच्छी रीति से मुझे आत्मा का पाठ पढ़ाया, सारे प्रश्नों के उत्तर देकर मुझे मेरे सच्चे परमपिता से मिलाया।

अब तो दुनिया ही बदल गई है। सृष्टि-चक्र को जाना, ड्रामा को समझा, इस शरीर रूपी कपड़े को भी समझा, अब लगता है कि मैं कहाँ विनाशी चीजों में माथामारी कर रही थी।

अब तो बाबा ने मेरा हाथ थाम लिया है। इतना निश्चय हो गया है कि वो मुझे गिरने ही नहीं देंगे। खुशी की ऐसी अनुभूति होती है जैसे रोम-रोम गाना गा रहा है। बाबा ने मुझे शान्त आत्मा, मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा तथा सदा खुश रहने वाली आत्मा बना दिया है। यह अलौकिक अनुभूति है। देह के सम्बन्धियों से ये अपना-पन कभी महसूस ही नहीं हुआ। अपने परमपिता से मिल कर, आत्मा का ज्ञान पाकर ऐसा खजाना मिला है जो मुझसे कोई छीन ही नहीं सकता। प्यारे शिव बाबा मुझे हाई जम्प करा रहे हैं, हर परिस्थिति में जीत दिला रहे हैं। मैंने बाबा में निश्चय कर उन्हीं से बातें करना शुरू कर दिया है। वो मेरे पिता के साथ-साथ दोस्त भी हैं और यह स्थिति परमानन्द की है। अब तो हर समय मुसकान रहती है मेरे चेहरे पर। ❖

पहले चैकिंग फिर पैकिंग

ब्रह्माकुमार बसंत सिखवाल, भवानी नगर, जयपुर

बाबा ने हमें कई बार कहा है, अपने अंदर की चैकिंग करते रहो, कहीं कोई सूक्ष्म विकार रह तो नहीं गया, चैकिंग करने पर ही विकारों का पता चलेगा, तभी दूर करेंगे और घर जाने की पैकिंग पूरी होगी। बाबा कहते हैं, सबकुछ अचानक होगा अत: अन्त समय समेटने में समय नहीं लगना चाहिए। जितना विचार सागर मंथन होगा उतनी ही चैक करने की आदत (एक्यूरेसी) बढ़ेगी और स्थिति अडोल बनेगी।

स्वयं व दूसरों की चैकिंग

दूसरों की जाँच भी करनी है लेकिन इसमें भी ध्यान रहे कि स्वयं की जाँच करते समय अपने अवगुणों को देखें, उन्हें दूर करें तथा दूसरों की जाँच के वक्त उनके गुण देखें। दूसरों के गुण देखने से कभी झगड़ा, लड़ाई, मनमुटाव की स्थिति नहीं बनेगी। जब लक्ष्य लक्ष्मी नारायण जैसा बनने का है तो जाँच भी मजबूत होनी चाहिए।

जाँच करेंगे तो आँच नहीं आएगी

जब हम लगातार अपनी जाँच में व्यस्त रहेंगे तो गलती और गफलत की संभावनाएँ कम हो जाएँगी या खत्म हो जाएँगी। इससे हमारे ऊपर कोई आँच नहीं आएगी। बड़ा व्यक्ति छोटी-छोटी बातों का भी विशेष ध्यान रखता है, तभी तो बड़ा बनता है। हमारा लक्ष्य तो स्वर्ग के महाराजा-महारानी बनने का है।

अंश से वंश बनता है

किसी सूक्ष्म बुराई का अंश भी अंदर रह गया तो वंश बनने में समय नहीं लगता है। यदि बड़े-से तालाब में थोड़ा-सा भी जहर मिला दें तो उसका पानी पीने लायक नहीं रहता। उसकी गुणवत्ता पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है। यदि लोहे के बर्तन को समय पर साफ न किया जाए तो उस पर लगा जंक स्थाई रूप ले लेता है इसलिए निरन्तर सफाई

आवश्यक है। हमारा मन भी बर्तन की तरह है, सफाई न हो तो बुराई (विकार) पैर जमा लेती है।

आवश्यकता है शान्ति की क्रान्ति की

जब व्यक्ति को घर में शांति नहीं मिलती तो वह बाहर घूमने जाता है लेकिन अशांति तो अंदर है, वो बाहर घूमने से कैसे निकलेगी। उसके लिए तो हमें अंदर उतरना (घूमना) पड़ेगा तभी तो चैक कर पाएंगे कि अशांति का मूल कारण क्या है, कैसे विचारों का आवागमन हो रहा है, कहीं कोई विकार रह तो नहीं गया है? बाहर घूमने से तो अल्पकाल की खुशी के नीचे वो बुराई दब जाएगी और अशांति का वास्तविक कारण बाहर नहीं आ पाएगा। यदि शांति स्थापित करनी है तो मन को मंदिर बनाना पड़ेगा। बाहर मंदिर बनाने से तो कोई समस्या हल नहीं होगी। अभी तक बहुत क्रांतियाँ हुई हैं देश में आजादी के लिए लेकिन अब मन को इन विकारों से मुक्त कराने के लिए शांति की क्रांति लाने की आवश्यकता है और वो शिव बाबा के ज्ञान से संभव है। तभी मनुष्य को फिर से देवता बना पायेंगे। तभी कह पायेंगे, आज का मनुष्य, कल का देवता। क्रांति लानी है और शांति स्थापित करनी है, यही हमारा उद्देश्य है। हमें धन की वृद्धि के साथ-साथ ज्ञान की वृद्धि अर्थात् उसका विस्तार करने की आवश्यकता है।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1.**अहमदाबाद (मेमनगर)-** 'प्रभु वरदान भवन' के वार्षिकोत्सव के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित है राजयोगिनी ईशू दादी, ब्र.कु.निर्वैर भाई, ब्र.कु.मोहिनी बहन, ब्र.कु.मुन्नी बहन, ब्र.कु.चंद्रिका बहन तथा अन्य। 2.**कटक-** 'स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए राजयोग' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए झारखण्ड की राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुर्मु, ब्र.कु.कमलेश बहन, ब्र.कु.सुलोचना बहन, ब्र.कु.नाथमल भाई तथा अन्य। 3.**टोंक-** राजस्थान के कृषि मंत्री भ्राता प्रभुलाल सैनी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुषमा बहन। 4.**जयपुर (राजापार्क)-** 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के शिक्षा मंत्री कालोचरण सर्राफ, ब्र.कु.पूनम बहन तथा अन्य। 5.**दिल्ली (मजलिस पार्क)-** केन्द्रीय जल एवं स्वच्छता मंत्री भ्राता राम कृपाल यादव को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद समूह चित्र में हैं ब्र.कु.राजकुमारी बहन, ब्र.कु.शारदा बहन तथा अन्य। 6.**ढाका-** ब्र.कु.शक्तिराज भाई बांग्लादेश संसद के उपाध्यक्ष भ्राता फैजल रब्बी को ईश्वरीय सौगात देते हुए। 7.**शाहपुर (गांधीनगर)-** किसान सशक्तिकरण दिव्य महोत्सव का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.राजू भाई, ब्र.कु.सरला बहन, भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भ्राता पुरुषोत्तम रूपाला, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.चन्द्रिका बहन, ब्र.कु.शारदा बहन, जिला पंचायत प्रमुख हिना बहन पटेल, आत्मा समिति के निदेशक डॉ.आर.ए.शेरसिया तथा अन्य। 8.**बाँकुरा-** विश्व भारती, शान्ति निकेतन के उपकुलपति प्रो. रजत कान्ता रॉय को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रीति बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 25th of each Month &
Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : July, 2015.

नई दिल्ली :

विज्ञान भवन में 'समग्र स्वास्थ्य के लिए योग' विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान आध्यात्मिक चर्चा करते हुए केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह, सद्गुरु जग्गी वासुदेव महाराज, ब्र.कु. शिवानी बहन एवं अन्य आध्यात्मिक गुरु।

1

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत) :

मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई, भारतीय प्रेस परिषद् के अध्यक्ष न्यायमूर्ति भ्राता सी.के.प्रसाद, प्रेस परिषद् सदस्य भ्राता राजीव रंजन नाग, कुशा भाऊ ठाकरे पत्रकारिता यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ.एम.एम.परमार, ब्र.कु.शीलू बहन, ब्र.कु.निरंजना बहन तथा अन्य।

2

शान्तिवन (आबू रोड) :

न्यायविद् प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय की न्यायाधीश बहन दीपा शर्मा, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.भ्राता रमेश शाह, लॉ यूनिवर्सिटी, कटक के उप-कुलपति भ्राता श्रीकृष्णा देवा राव, ब्र.कु.पुष्पा बहन तथा अन्य।

3

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत):

'स्वर्णिम युग के लिए दिव्य ज्ञान' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, दिल्ली के उप-मुख्यमंत्री भ्राता मनीष सिसोदिया, ब्र.कु.मृत्युन्जय भाई, वर्धमान महावीर ओपन यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति डॉ.विनय कुमार पाठक तथा अन्य।

4